श्रील कविकर्णपूर विरचित
श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका
गौड़ीय वेदान्त प्रकाशन

॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्रीचैतन्य महाप्रभुके प्रिय परिकर श्रीशिवानन्दसेनके आत्मज

श्रीश्रील कवि कर्णपूर द्वारा विरचित

श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति एवं तदन्तर्गत भारतव्यापी
श्रीगौड़ीय मठोंके प्रतिष्ठाता, श्रीकृष्णचैतन्याम्नाय
दशमाधस्तनवर श्रीगौड़ीयाचार्य केशरी
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्री

श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके

अनुगृहीत

त्रिदण्डिस्वामी

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराज

द्वारा

अनुवादित एवं सम्पादित

प्रकाशक –

श्रीमान् प्रेमानन्द ब्रह्मचारी 'सेवारत्न'

प्रथम संस्करण – ५००० प्रतियाँ

श्रीश्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजजीकी
आविर्भाव तिथि
श्रीचैतन्याब्द ५२१
७ फरवरी २००८

प्राप्तिस्थान

श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
मथुरा (उ॰प्र॰)
०५६५–२५०२३३४

श्रीरूप–सनातन गौड़ीय मठ
सेवाकुञ्ज, वृन्दावन (उ॰प्र॰)
०५६५–२४४३२७०

श्रीगिरिधारी गौड़ीय मठ
दसविसा, राधाकुण्ड रोड
गोवर्धन (उ॰प्र॰)
०५६५–२८१५६६८

श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठ
कोलेरडाङ्गा लेन
नवद्वीप, नदीया (प॰बं॰)
०९३३३२२२७७५

श्रीरमणबिहारी गौड़ीय मठ
बी–३, जनकपुरी, नई दिल्ली
०११–२५५३३५६८

खण्डेलवाल एण्ड संस
अठखम्बा बाजार, वृन्दावन
०५६५–२४४३१०१

समर्पण

परम करुणामय एवं अहैतुकी कृपालु अस्मदीय गुरुपादपद्म नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशत श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजके अतिशय कृपापात्र, उनके श्रीचरण-कमलोंको ही अपने जीवनका सर्वस्व माननेवाले, परम निष्ठावान् अपने ऐसे सतीर्थ नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद श्रीश्रील भक्तिवेदान्त त्रिविक्रम गोस्वामी महाराजके श्रीकरकमलोंमें 'श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका' नामक ग्रन्थ समर्पण करता हूँ, जो सदैव अनेकानेक युक्तिपूर्ण प्रसङ्गोंको उठाकर मुझसे हमारी परम्पराके अति निगूढ़विचारोंको श्रवण करके परमान्दित होते थे।

प्रस्तावना

परमाराध्य श्रीगुरुपादपद्म नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी अनुकम्पा और प्रेरणासे उन्हींकी प्रीतिके लिए आज श्रीशचीनन्दन गौरहरिके प्रिय परिकर श्रीशिवानन्द सेनके आत्मज श्रील कविकर्णपूर द्वारा रचित श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थको राष्ट्रभाषा हिन्दीमें प्रकाशित करते हुए अपार आनन्दका अनुभव कर रहा हूँ।

ग्रन्थकारका परिचय

श्रील कविकर्णपूरका आविर्भाव पश्चिम बङ्गालके अन्तर्गत काँचड़ापाड़ा नामक ग्राममें १४४८ शकाब्द (१५२७ ई०) में हुआ था। प्रस्तुत श्रीगौरगणोद्देश-दीपिकाके श्लोक संख्या १७६ में श्रील कविकर्णपूरने स्वयं अपने माता एवं पिताका परिचय इस प्रकार दिया है—

पुरा वृन्दावने वीरादूती सर्वाश्च गोपिकाः।
निनाय कृष्णनिकटं सेदानीं जनको मम।
व्रजे बिन्दुमती यासीदद्य सा जननी मम॥

पहले जो वृन्दावनकी वीरा नामक दूती सभी गोपियोंको श्रीकृष्णके निकट ले जाती थीं, वे अब मेरे पिता श्रीशिवानन्द सेन हैं तथा व्रजकी बिन्दुमती अब मेरी माता हैं।

श्रीशिवानन्द सेनके तीन पुत्र थे—श्रीचैतन्यदास, श्रीरामदास तथा श्रीपरमानन्दपुरी दास। श्रील कविराज गोस्वामीने श्रीचैतन्यचरितामृतमें लिखा है कि—जिनके सभी सगे-सम्बन्धियोंको श्रीमन् महाप्रभु अपना मानते थे, ऐसे श्रीशिवानन्द सेनके अपार समुद्र जैसे सौभाग्यका कौन पार पा सकता है?

श्रीमन् महाप्रभुने अपने सेवक गोविन्दको भी आज्ञा दी थी कि श्रीशिवानन्द सेनकी पत्नी तथा जितने भी पुत्र यहाँपर अर्थात् श्रीजगन्नाथ पुरीमें आये हैं, उन सबको मेरा उच्छिष्ट प्रसाद अवश्य ही प्रदान करना।

श्रीशिवानन्द सेन श्रीजगन्नाथजीकी रथयात्राके बहाने प्रत्येक वर्ष श्रीमन् महाप्रभुके दर्शनके लिए हजारों यात्रियोंको अपने साथ लेकर पुरीमें पधारते थे। एक बार जब श्रीशिवानन्द सेन श्रीमन् महाप्रभुके पास आये, तब श्रीमन् महाप्रभुने उनसे कहा—

एबार तोमार येइ हइबे कुमार।
'पुरीदास' बलि नाम धरिह ताहार॥
(चै॰ च॰ अ॰ १२/४७)

इस बार तुम्हारा जो पुत्र होगा, तुम उसका नाम 'पुरीदास' रखना।

उस समय वह बालक अपनी माताके गर्भमें था। जब शिवानन्द सेन अपने घर लौट आये, तब उसका जन्म हुआ।

प्रभु-आज्ञाय धरिला नाम—'परमानन्द-दास'।
'पुरीदास' करि प्रभु करेन उपहास॥
(चै॰ च॰ अ॰ १२/४९)

उन्होंने श्रीमन् महाप्रभुकी आज्ञासे उस बालकका नाम परमानन्द दास रख दिया तथा श्रीमन् महाप्रभु उस बालकको 'पुरीदास' कहकर उपहास करते थे।

एक वर्ष बाद जब श्रीशिवानन्द सेन अपने तीनों पुत्रोंको साथ लेकर महाप्रभुके पास गये, तब—

छोट पुत्रे देखि प्रभु नाम पूछिला।
'परमानन्द दास'–नाम सेन जानाइला॥
(चै॰ च॰ अ॰ १२/४५)

उनके छोटे पुत्रको देखकर जब श्रीमन् महाप्रभुने उसका नाम पूछा तब श्रीशिवानन्द सेनने कहा कि इसका नाम परमानन्द दास है।

श्रीचैतन्यचरितामृतमें कही गयी उपरोक्त पयारोंको पढ़नेके उपरान्त कतिपय शङ्कायें उठती हैं। पहली शङ्का यह है कि जब श्रीमन् महाप्रभुने श्रीशिवानन्द सेनको उनके पुत्रका नाम 'पुरीदास' रखनेके लिए कहा, तो फिर उन्होंने अपने पुत्रका नाम 'पुरीदास' न रखकर 'परमानन्द दास' क्यों रखा? दूसरी शङ्का यह है कि श्रीशिवानन्द सेनने यदि किसी कारणवश अपने पुत्रका नाम परमानन्द दास रखा भी, तो फिर श्रीकविराज गोस्वामी ऐसा क्यों कह रहे हैं कि श्रीशिवानन्द सेनने महाप्रभुकी आज्ञासे ही अपने पुत्रका नाम परमानन्द दास रखा? तीसरी शङ्का यह है कि श्रीमन् महाप्रभु 'पुरीदास' कहकर उस बालकका उपहास क्यों करते थे?—इन तीनों शङ्काओंका समाधान प्रस्तुत किया जा रहा है—श्रील शिवानन्द सेनकी श्रीमन् महाप्रभुके चरणकमलोंमें ऐकान्तिक

भक्तिका तथा श्रीमन् महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु तथा अनेकानेक गौड़ीय वैष्णवोंकी श्रीशिवानन्द सेनके प्रति कृपाका स्पष्ट उल्लेख श्रीचैतन्यचरितामृत, श्रीचैतन्यभागवत, श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक आदि अनेक ग्रन्थोंमें मिलता है। इसलिए यह तो कदापि सम्भव नहीं है कि साक्षात् श्रीमन् महाप्रभु द्वारा दिये गये उपदेशकी अवमानना कर श्रीशिवानन्द सेनने अपने पुत्रका नाम परमानन्द दास रख दिया होगा। किन्तु यह स्पष्ट रूपसे समझमें आता है कि जब श्रीमन् महाप्रभु उन्हें अपने पुत्रका नाम 'पुरीदास' रखनेके लिए कह रहे थे, तभी श्रीशिवानन्द सेनने उनकी प्रेरणासे मन-ही-मनमें समझ लिया कि श्रीमन् महाप्रभु मुझे मेरे तीसरे पुत्रका नाम परमानन्द दास रखनेके लिए कह रहे हैं। इसीलिए कविराज गोस्वामीने लिखा कि प्रभुकी आज्ञासे ही श्रीशिवानन्द सेनने अपने पुत्रका नाम परमानन्द दास रखा। श्रीशिवानन्द सेन द्वारा ऐसा समझनेका जो कारण है, यहाँ उसका भी उल्लेख किया जा रहा है। श्रीमन् महाप्रभु श्रीमाधवेन्द्र पुरीपादके शिष्य श्रीपाद परमानन्द पुरी गोस्वामीका गुरु-तुल्य आदर-सम्मान करते थे। श्रीमन् महाप्रभु तथा उनके परिकर कभी भी उनका नाम उच्चारण नहीं करते थे, केवल पुरी गोसाञि कहते थे। उस समय नीलाचलमें 'पुरी गोसाञि' कहनेसे सभी समझ लेते थे कि यह परमानन्द पुरी गोस्वामीके विषयमें ही कहा जा रहा है। इसलिए प्रभु द्वारा 'पुरीदास' कहे जानेपर भी श्रीशिवानन्द सेनने इसे परमानन्द दास ही समझ लिया, यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। श्रीमन् महाप्रभुने स्वयं

भी श्रीपरमानन्द पुरीके समक्ष इस बालकको देखकर कहा था "स्वामिन्! तव दासः।" अर्थात् हे श्रीपरमानन्दपुरी प्रभो! यह (श्रीकविकर्णपूर) तुम्हारा दास है। (चैतन्यचन्द्रोदय नाटक १०/५)

ऐसा प्रतीत होता है कि परमानन्दपुरी दास नाम रखकर श्रीमन् महाप्रभु उसे श्रीपरमानन्दपुरी गोस्वामीके चरणोंमें अर्पण करनेकी इच्छाका पोषण कर रहे थे।

श्रीमन् महाप्रभु बालकको 'पुरीदास' कहकर जो उपहास करते थे, उससे उस बालकके प्रति उनका स्नेह और करुणा ही प्रकाशित होती है। श्रीपाद पुरी गोस्वामीकी कृपाधारा इस बालकपर वर्षित हो—प्रभुकी यही इच्छा ही उनके परिहासमें अन्तर्निहित थी। यह परमानन्द दासके प्रति प्रभुका परिहासके छलसे आशीर्वाद ही है, न कि लौकिक उपहास।

अन्य किसी एक वर्ष श्रीशिवानन्द सेन अपनी पत्नी तथा परमानन्दपुरी दास नामक छोटे पुत्रको अपने साथ लाये। पुत्रको अपने साथ लेकर जब वे श्रीमन् महाप्रभुके पास गये, तब उन्होंने अपने पुत्रके द्वारा श्रीमन् महाप्रभुके चरणकमलोंकी वन्दना करायी। उसी समय महाप्रभु उससे बार-बार कहने लगे—"कृष्ण बोलो, कृष्ण बोलो", किन्तु पुनः-पुनः कहनेपर भी बालकने कृष्णनामका उच्चारण नहीं किया। श्रीशिवानन्द सेनने भी बालकके मुखसे कृष्णनाम उच्चारण करानेका बहुत प्रयास किया, किन्तु तब भी उस बालकने कृष्णनामका उच्चारण नहीं किया। श्रीमन् महाप्रभु अत्यन्त विस्मयके साथ कहने लगे कि मैंने सभी जगत्वासियोंको

कृष्णनामका उच्चारण कराया, और तो और, स्थावर तक को भी कृष्णनाम उच्चारण कराया, किन्तु कैसे आश्चर्यकी बात है कि इस बालकके मुखसे श्रीकृष्णनामका उच्चारण नहीं करा पाया। श्रीमन् महाप्रभुको ऐसा कहते सुनकर श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामीने कहा—प्रभो! मुझे इस बालकका अभिप्राय यह प्रतीत हो रहा है कि "श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुने मुझे स्वयं दीक्षा दी है; अतः गुरुप्रदत्त मन्त्र, सबके सामने उच्चारण करना उचित नहीं है।" ऐसा विचारकर ही यह बालक मौन है।

और एक दिन जब श्रीमन् महाप्रभुने बालकको कहा—हे पुरीदास कुछ बोलो। तब उस बालकने अपने मुखसे निम्नलिखित श्लोक उच्चारण किया—

श्रवसोः कुवलयमक्ष्वो रञ्जनमुरसो महेन्द्रमणिदाम।
वृन्दावन-तरुणीनां मण्डनमखिलं हरिर्जयति॥

अर्थात् उन श्रीहरिकी जय हो, जो श्रीवृन्दावनकी रमणियोंके अखिल भूषण स्वरूप हैं, जिनके दोनों कानोंके कर्णपूर भी वे श्रीहरि हैं, जिनके नेत्रोंके अञ्जन भी वे ही हैं तथा जिनके वक्षःस्थलके इन्द्रनीलमणिके हार भी वे ही हैं।

सात वर्षके बालकके मुखसे ऐसे श्लोकको सुनकर सभी आश्चर्यचकित रह गये। यह सब श्रीचैतन्य महाप्रभुकी कृपासे ही सम्भव हुआ।

यद्यपि श्रीकविकर्णपूरने महाप्रभुसे कृष्णनाम-मन्त्रको प्राप्त किया था, तथापि उन्होंने सामाजिक प्रथाके अनुसार श्रीनाथ पण्डितसे मन्त्र ग्रहण किये। अपने श्रीआनन्दवृन्दावन-

चम्पूः नामक ग्रन्थके प्रारम्भमें ही उन्होंने श्रीनाथ पण्डितकी वन्दना की है। श्रील कविकर्णपूरके गुरुदेव श्रीनाथ पण्डितजी द्वारा स्थापित कृष्णदेव विग्रह अभी भी काँचड़ापाड़ामें विद्यमान है।

यद्यपि श्रील कविकर्णपूरने अपने व्रजलीलाके नामको प्रकाशित नहीं किया, तथापि वैष्णवाचार-दर्पणमें कहा गया है कि—

> गुणचूड़ा सखी हन कवि कर्णपूर।
> काँचड़ापाड़ाय वास चैत्य शखा शूर॥
>
> वृद्ध-पदाङ्गुष्ठ प्रभु याँर मुखे दिला।
> पुरीदास नाम बलि शक्ति सञ्चारिला॥

श्रील कविकर्णपूर व्रजकी गुणचूड़ा सखी हैं। उनका वासस्थान काँचड़ापाड़ा है तथा वे श्रीचैतन्य महाप्रभुकी शाखामें अत्यधिक प्रमुख हैं। श्रीमन् महाप्रभुने अपने श्रीचरण-कमलका अँगूठा उनके मुखमें दिया था तथा पुरीदास नाम प्रदान करके उनमें शक्तिका सञ्चार किया था।

श्रील कविकर्णपूरने इस श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थके अतिरिक्त श्रीचैतन्यचरित महाकाव्य, श्रीआनन्दवृन्दावन-चम्पूः, अलङ्कार-कौस्तुभ, श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकम्, आर्याशतकम् आदि ग्रन्थोंकी रचना की है।

श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थका परिचय

श्रीकृष्णलीलाके समय व्रजमें जो लीला परिकर थे, श्रीकृष्णके जो माता-पिता थे, सखा-प्रियाएँ-दास-दासियाँ-

वंशी-शुक-शारी आदि थे, वे श्रीगौरलीलामें किस-किस नामसे, कहाँ पर और किस भावसे अवतीर्ण हुए—उन सबका तथा श्रीगौरलीलाके अन्यान्य पार्षदोंके पूर्व-पूर्व स्वरूपोंका एवं श्रीगौड़ीय सम्प्रदायके मध्वानुगत्यका श्रील कविकर्णपूरने इस प्रस्तुत श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थमें वर्णन किया है। जो जानकारी इस ग्रन्थमें उपलब्ध है, वह अन्य किसी भी स्थानपर एक साथ उपलब्ध नहीं है। अतएव यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके भक्त इस ग्रन्थका ठीक रूपसे पठन-पाठन करेंगे तो उन्हें अपनी उपासना पद्धतिके विषयमें कोई भी भ्रम नहीं रह जायेगा अर्थात् उन्हें यह दृढ़ विश्वास हो जायेगा कि जगत्के जीवोंको श्रीहरिनाम और अनर्पित उन्नतोज्ज्वल-प्रेम प्रदान करनेके लिए, विशेषतः असमोद्ध्र्व श्रीराधा-भावमाधुरीका रसास्वादन करनेके लिए श्रीनन्दनन्दन ही श्रीमती राधाके भाव और कान्तिको अङ्गीकार करके श्रीशचीनन्दन गौरहरिके रूपमें अवतरित हुए हैं।

जगद्गुरु श्रीचैतन्य महाप्रभुने स्वयं भक्तभावसे अवतरित होकर जब स्वयं कृष्णभक्तिका आचरणकर जीवोंको श्रीकृष्णभक्ति करनेका उपदेश दिया है, तो हमें भी उनके उपदेशानुसार श्रीराधाकृष्णयुगलका ही भजन करना चाहिये। किन्तु श्रीयुगलसेवा करनेसे पूर्व श्रीगुरुदेव, श्रीगुरु-परम्परा तथा श्रीगौराङ्गदेवका अवश्य ही स्मरण करना चाहिये। ऐसा नहीं करनेसे परमार्थकी सिद्धि नहीं होती। अतएव परमार्थ सिद्धिके लिए इस ग्रन्थमें वर्णित विषयवस्तुका भलीभाँति आश्रय करना चाहिये।

यद्यपि श्रीकविकर्णपूर द्वारा विरचित इस ग्रन्थमें दिये गये श्रीगौरभक्तोंका पूर्व परिचय श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामीके श्रीचैतन्यचरितामृत तथा श्रीध्यानचन्द्र गोस्वामी द्वारा दी गयी पद्धतिसे कुछ भिन्न है, जैसे—श्रीकविकर्णपूरने इस ग्रन्थमें श्रीस्वरूप दामोदरका विशाखा सखीके रूपमें परिचय दिया है, किन्तु श्रीध्यानचन्द्र-पद्धतिमें इसके विपरीत श्रीस्वरूप दामोदरको ललिता सखी कहा गया है; इसके अतिरिक्त और भी किन्हीं-किन्हीं गौर-परिकरोंके परिचयमें कुछ-कुछ पार्थक्य देखा जाता है। फिर भी केवल इसी कारणसे इस ग्रन्थकी महिमा कम नहीं हो जाती। यह तो अपने-अपने हृदयमें भगवत्कृपासे उन्हें जैसी-जैसी स्फूर्ति हुई, उन्होंने वैसे ही लिखा है। फिर भी श्रीमन् महाप्रभुके परिकर सप्तम गोस्वामी श्रील सच्चिदानन्द भक्तिविनोद ठाकुर और उनके कृपापात्र जगद्गुरु श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती 'प्रभुपाद' ने जिस रूपमें मान्यता दी है—हम भक्तिविनोद-गौरकिशोर-सारस्वत-धाराके श्रद्धालुओंको उसी रूपमें ग्रहणाीय है। तब भी यह बात ध्यान रखने योग्य है कि श्रील प्रभुपाद भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुरने भी श्रीचैतन्यचरितामृतके अपने अनुभाष्यमें अनेकानेक स्थानोंपर इस ग्रन्थके श्लोकोंको उद्धृत किया है। अतएव श्रीमन् महाप्रभुके परिकर श्रीकविकर्णपूर द्वारा लिखे गये परिचयोंकी अवज्ञा नहीं होनी चाहिये।

इन ग्रन्थका प्रूफ-संशोधन श्रीमान् भक्तिवेदान्त माधव महाराज, श्रीमान् विजयकृष्ण ब्रह्मचारी तथा श्रीमती मधु खण्डेलवालने किया है। कम्पोजिंग श्रीमान् अच्युतानन्द ब्रह्मचारी तथा ले-आउट आदि बेटी शान्ति दासी द्वारा

किया गया है। श्रीमान् किशोरी मोहन ब्रह्मचारी (राधाकुण्ड दास) ने प्रकाशन सम्बन्धीय सेवाओंमें योगदान दिया है। मुखपृष्ठका चित्र श्रीमती श्यामरानी तथा डिजाइन श्रीमान् कृष्णकारुण्य ब्रह्मचारीने प्रस्तुत किया है। इन सबकी सेवा चेष्टा अत्यन्त सराहनीय और उल्लेखनीय है। मैं श्रीगुरु-गौराङ्ग-गान्धर्विका-गिरिधारीके श्रीचरणकमलोंमें यही प्रार्थना करता हूँ कि ये सभी सदैव निष्कपट रूपसे इसी प्रकार गुरुवर्गकी वाणीके प्रचारमें सहायता करते हुए वैष्णवोचित जीवन-यापन करें।

इस ग्रन्थमें यदि कोई भूल-त्रुटि दृष्टिगोचर हो, तो पारमार्थिक पाठकगण निजगुणोंसे क्षमा करेंगे तथा संशोधनपूर्वक ग्रन्थका सार ग्रहण करेंगे।

परमार्थ प्राप्तिके इच्छुक श्रद्धालुजन इस ग्रन्थका पाठ और कीर्त्तनकर परमार्थके पथपर अग्रसर हों—यही प्रार्थना है। अलमतिविस्तरेण।

श्रीनरहरि सेवाविग्रह प्रभुका तिरोभाव महोत्सव,
२७ जनवरी २००८ ई०
५२१ चैतन्याब्द

श्रीहरि-गुरु-वैष्णव-कृपालेश-प्रार्थी
श्रीभक्तिवेदान्त नारायण

चम्पकहट्टमें सेवित श्रीश्रीगौर–गदाधर

श्रीश्रीकेशवजी गौड़ीय मठमें सेवित
श्रीश्रीराधा–विनोदविहारी

॥ श्रीगौरहरिर्जयति ॥

श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका

श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्राय नमः

मङ्गलाचरण

यः श्रीवृन्दावनभुवि पुरा सच्चिदानन्दसान्द्रो
गौराङ्गीभिः सदृशरुचिभिः श्यामधामा ननर्त्त।
तासां शश्वद्दृढतरपरीरम्भसम्भेदतः किम्
गौराङ्गः सन् जयति स नवद्वीपमालम्बमानः॥१॥

जिन श्यामल अङ्गवाले सच्चिदानन्दघन स्वरूप श्रीहरिने पूर्वकाल (पूर्वलीला) में श्रीवृन्दावन भूमिमें अपने ही समान दीप्तिमती गौर वर्णयुक्त अङ्गोंवाली व्रजाङ्गनाओंके साथ नृत्य किया था, क्या वे ही उन गोपाङ्गनाओंके निरन्तर गाढ़ आलिङ्गन रूपी सङ्गमके कारण गौराङ्ग स्वरूप होकर श्रीनवद्वीपधामका आश्रय लेकर अर्थात् वहाँ विराजमान होकर जययुक्त हो रहे हैं? ॥१॥

नमस्यामोऽस्यैव प्रियपरिजनान् वत्सलहृदः
प्रभोरद्वैतादीनपि जगदघौघक्षयकृतः।
समानप्रेमाणः समगुणगणास्तुल्यकरुणाः
स्वरूपाद्या येऽमी सरसमधुरास्तानपि नुमः॥२॥

जगत्के पापोंका नाश करनेवाले और स्नेहसे परिपूर्ण हृदयवाले श्रीअद्वैताचार्य आदि श्रीमन् महाप्रभुके प्रिय परिकरोंको मैं नमस्कार करता हूँ तथा (श्रीमन् महाप्रभुके प्रति) समान प्रीति रखनेवाले, परस्पर समान गुणशाली, समान करुण हृदय एवं सरस मधुर भाववाले श्रीस्वरूप दामोदर आदि सभी महात्माओंको भी नमस्कार करता हूँ॥२॥

गुरुं नः श्रीनाथाभिधमवनिदेवान्वयविधुम्
नुमो भूषारत्नं भुव इव विभोरस्य दयितम्।
यदास्यादुन्मीलन्निरवकर-वृन्दावनरहः-
कथास्वादं लब्ध्वा जगति न जनः कोऽपि रमते॥३॥

श्रीगौराङ्गदेवके परमप्रिय, ब्राह्मणकुलके चन्द्र तथा जगत्के अलङ्कार रत्नस्वरूप, उन श्रीनाथ (पण्डित) नामक अपने श्रीगुरुदेवको नमस्कार करता हूँ, जिनके मुखनिःसृत श्रीकृष्णकी मधुर वृन्दावनकी निर्जनकेलि-कथाओंका आस्वादनकर जगत्में ऐसा कौन-सा व्यक्ति होगा जो आनन्दमें मग्न नहीं हो जायेगा?॥३॥

पितरं श्रीशिवानन्दं सेनवंशप्रदीपकम्।
वन्देऽहं परया भक्त्या पार्षदाग्र्यं महाप्रभोः॥४॥

श्रीमन् महाप्रभुके पार्षद प्रवर, सेनवंशके प्रदीप स्वरूप अपने पिता श्रीशिवानन्द सेनकी परम भक्तिपूर्वक वन्दना करता हूँ॥४॥

ग्रन्थका उपकरण

ये विख्याताः परिवाराः श्रीचैतन्यमहाप्रभोः।
नित्यानन्दाद्वैतयोश्च तेषामपि महीयसाम्।
गोपालानाञ्च पूर्वाणि नामानि यानि कानिचित्।
स्वस्वग्रन्थे स्वरूपाद्यैर्दर्शितान्यादिसूरिभिः।
विलोक्यान्यानि साधूनां मथुरौड्रनिवासिनाम्।
गौडीयानामपि मुखान्निशम्य स्वमनीषया।
विविच्याम्रेडितः कैश्चित् कैश्चित्तानि लिखाम्यहम्।
नाम्ना श्रीपरमानन्ददासः सेवितशासनः ॥५॥

श्रीचैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु और श्रीअद्वैताचार्यके विख्यात परिवारोंके महानुभावोंके श्रीकृष्णलीलामें गोपवंशियोंके रूपमें जो-जो नाम थे, उन्हें मूलतः श्रीस्वरूप दामोदर प्रभु तथा उनके अतिरिक्त अन्यान्य अनेक विद्वानोंने अपने ग्रन्थोंमें प्रकाश किया है। उन सब ग्रन्थोंका अवलोकनकर तथा इसके अतिरिक्त मथुरा, उड़ीसा तथा गौड़ (बङ्गाल) निवासी साधु-महात्माओंके मुखसे श्रवण करनेके उपरान्त उसे अपनी बुद्धि द्वारा विवेचना कर कुछेक पूजनीय महात्माओंके बार-बार अनुरोधसे श्रीमन् महाप्रभुके परिकरोंका (स्नेहपूर्ण) शासन प्राप्त करनेवाला मैं श्रीपरमानन्द दास नामक व्यक्ति इस ग्रन्थकी विषय-वस्तुको संग्रहकर लिपिबद्ध कर रहा हूँ॥५॥

ग्रन्थ आरम्भ

यद्वत्पुरा कृष्णचन्द्रः पञ्चतत्त्वात्मकोऽपि सन्।
यातः प्रकटतां तद्वद्गौरः प्रकटतामियात् ॥६॥

जिस प्रकार पूर्वकालमें श्रीकृष्णचन्द्र पञ्चतत्त्वात्मक स्वरूप[१] होकर प्रकटित हुए थे, ठीक उसी प्रकार श्रीगौरचन्द्र भी पञ्चतत्त्वात्मक होकर प्रकटित हुए हैं॥६॥

भगवान् श्रीकृष्णका पञ्चतत्त्वात्मक होकर प्रकट होना

स्वाभिन्नेन युतः तत्त्वं पञ्चतत्त्वमिहोच्यते।
अन्यथा तदसम्बन्धात्तत्तत्त्वं स्याच्चतुष्टयम् ॥७॥

अपनेसे अभिन्न अन्य चार तत्त्वोंसे युक्त होकर ही भगवान् पञ्चतत्त्वात्मक कहलाते हैं। अन्यथा इस सम्बन्धके अभावमें अन्य चार तत्त्व उनसे पृथक् होते[२]॥७॥

तद्भिन्नं यत्तदेवात्र तदभिन्नं विभाव्यताम्।
यतः स्वेच्छया शक्त्या कृष्णस्तादृशतां गतः ॥८॥

पञ्चतत्त्वमें श्रीकृष्णके अतिरिक्त जो (अन्य चार तत्त्व) श्रीकृष्णसे भिन्न प्रतीत होते हैं, उन्हें भी श्रीकृष्णसे अभिन्न

---

[१] स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण स्वयंरूपके अतिरिक्त, अपनी इच्छाशक्तिके प्रभावसे अन्य चार रूपोंमें आत्मप्रकाश करते हैं। अतएव अद्वय ज्ञान परतत्त्व श्रीकृष्णचन्द्र ही पञ्चतत्त्वात्मक अर्थात् (१) स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण, (२) विलास, (३) अवतार, (४) शुद्धभक्त और (५) शक्तिके रूपमें अभिव्यक्त होते हैं।

[२] इन पाँच तत्त्वोंमें स्वयं भगवान्को भी गिना जाता है, यदि ऐसा स्वीकार न किया जाये तो फिर तत्त्वकी संख्या केवल चार ही रह जाती है।

ही समझना होगा। क्योंकि श्रीकृष्ण अपनी स्वतन्त्र इच्छाशक्तिके अनुसार[१] ही पञ्चतत्त्वात्मक स्वरूपको प्राप्त हुए हैं॥८॥

श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामी द्वारा वर्णित पञ्चतत्त्वका निरूपण

अतः स्वरूपचरणैरुक्तं तत्त्वनिरूपणे।
उपाधिभेदात् पञ्चत्वं तत्त्वस्येह प्रदर्श्यते॥९॥

इसलिए श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामीने तत्त्व-निरूपणमें उपाधि भेदसे जिन पाँच तत्त्वोंका वर्णन किया है, यहाँ उसी पञ्चतत्त्वको प्रदर्शित किया जा रहा है॥९॥

"पञ्चतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्॥"१०॥

"भक्त-रूप, भक्त-स्वरूप, भक्तावतार, भक्ताख्य अर्थात् शुद्धभक्त तथा भक्त-शक्ति नामक पञ्चतत्त्वात्मक श्रीकृष्ण (श्रीकृष्णचैतन्यदेव) को मैं नमस्कार करता हूँ॥"१०॥

ग्रन्थकार द्वारा संक्षेपमें पञ्चतत्त्वात्मक श्रीकृष्णचैतन्यदेवका वर्णन

अस्यार्थो विवृतस्तैर्यः स संक्षिप्य विलिख्यते।
भक्तरूपो गौरचन्द्रो यतोऽसौ नन्दनन्दनः।
भक्तस्वरूपो नित्यानन्दो व्रजे यः श्रीहलायुधः।
भक्तावतार आचार्योऽद्वैतो यः श्रीसदाशिवः।

---

[१] रसकी विचित्रताको सम्पादित करने हेतु अर्थात् उसे आस्वादन करनेके लिए एक ही तत्त्ववस्तु पाँच रूपोंमें प्रकटित होती है।

भक्ताख्याः श्रीनिवासाद्या यतस्ते भक्तरूपिणः।
भक्तशक्तिर्द्विजाग्रण्यः श्रीगदाधरपण्डितः॥११॥

यद्यपि श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामीने पञ्चतत्त्वके अर्थका विस्तृत वर्णन किया है, तथापि यहाँ पर उसे संक्षेपमें लिखा जा रहा है—

जो श्रीनन्दनन्दन हैं, वे ही भक्तरूपमें श्रीगौरचन्द्र हैं। जो व्रजमें श्रीहलधर (बलदेव) प्रभु हैं, वे ही भक्तस्वरूपमें श्रीनित्यानन्द प्रभु हैं। जो श्रीसदाशिव हैं, वे ही भक्तावतार श्रीअद्वैताचार्य हैं। श्रीवास आदि भक्तवृन्द ही भक्ताख्य अर्थात् शुद्धभक्तके रूपमें प्रसिद्ध हैं। द्विजश्रेष्ठ श्रीगदाधर पण्डित ही भक्तशक्ति हैं॥११॥

श्रीमद्विश्वम्भराद्वैतनित्यानन्दावधूतकाः।
अत्र त्रयः समुन्नेया विग्रहाः प्रभवश्च ते।
एको महाप्रभुर्ज्ञेयः श्रीचैतन्यो दयाम्बुधिः।
प्रभू द्वौ श्रीयुतौ नित्यानन्दाद्वैतौ महाशयौ।
गोस्वामिनो विग्रहाश्च ते द्विजश्च गदाधरः।
पञ्चतत्त्वात्मका एते श्रीनिवासश्च पण्डितः॥१२॥

यद्यपि पञ्चतत्त्वके अन्तर्गत आनेवाले श्रीमान् विश्वम्भर, श्रीअद्वैताचार्य और अवधूत श्रीनित्यानन्द—तीनों ही भगवद्विग्रह अर्थात् विष्णुतत्त्व और महाप्रभावशाली होनेके कारण प्रभु हैं, तथापि इन तीनोंमेंसे दयाके सागर श्रीचैतन्यदेव 'महाप्रभु' तथा श्रीनित्यानन्द और श्रीअद्वैताचार्य 'प्रभु' के नामसे प्रसिद्ध

हैं।[१] (भक्तों द्वारा) ये गोस्वामी (अर्थात् श्रीचैतन्य गोसाईं, श्रीनित्यानन्द गोसाईं तथा श्रीअद्वैत गोसाईं) के नामसे भी जाने जाते हैं। अन्य दो तत्त्वोंमेंसे श्रीगदाधर 'द्विज' तथा श्रीनिवास 'पण्डित' के नामसे प्रसिद्ध हैं॥१२॥

यदुक्तं तत्र गोस्वामि श्रीस्वरूपपदाम्बुजैः।
"त्रयोऽत्र विग्रहा ज्ञेयाः प्रभवश्चात्र ते त्रयः।
एको महाप्रभुर्ज्ञेयो द्वौ प्रभु सम्मतौ सताम्॥"१३॥

श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामी पादने भी ऐसा ही कहा है कि यद्यपि भगवद्विग्रह होनेके कारण ये तीनों ही 'प्रभु' हैं, तथापि साधुओंकी सम्मत रीतिके अनुसार उनमेंसे एक 'महाप्रभु' तथा अन्य दोनों 'प्रभु' हैं—ऐसा समझना चाहिये॥१३॥

एषां पार्षदवर्गा ये महान्तः परिकीर्त्तिताः।
नित्यानन्दगणाः सर्वे गोपाला गोपवेशिनः।
एषां सम्बन्धसम्पर्कादुपगोपालसत्तमाः॥१४॥

इन (पञ्चतत्त्व) के पार्षदवर्ग 'महान्त' नामसे प्रसिद्ध हैं। व्रजके गोपवेशी गोपाल इस नवद्वीप लीलामें श्रीनित्यानन्द

[१] इन तीन प्रभुओंमेंसे श्रीकृष्णचैतन्य 'महाप्रभु' हैं, क्योंकि वे अद्वितीय, निरपेक्ष और सम्पूर्ण रूपसे स्वतन्त्र स्वयं भगवान् हैं तथा श्रीनित्यानन्द और श्रीअद्वैताचार्य 'प्रभु' हैं, 'महाप्रभु' नहीं, क्योंकि यद्यपि ये भी ईश्वर हैं, तथापि श्रीकृष्णचैतन्यके समान अद्वितीय और सम्पूर्ण रूपसे स्वतन्त्र स्वयं भगवान् नहीं हैं, इनका प्रभुत्व श्रीकृष्णचैतन्यकी प्रभुता पर निर्भर करता है। इसलिए ये दोनों 'प्रभु' होनेपर भी अपने मूल तथा अंशी महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्यकी सेवा करते हैं, अंशीकी सेवा करना ही अंशका स्वरूपानुबन्धी कर्त्तव्य है।

प्रभुके गण होकर (द्वादश) 'गोपाल' कहलाते हैं। इन श्रेष्ठ गोपालोंके सम्बन्ध और सम्पर्कसे युक्त होनेके कारण (द्वादश) महाजनगण 'उपगोपाल' कहलाते हैं॥१४॥

तत्र श्रीमन्नवद्वीपे विश्वम्भरसमीपतः।
विलसन्ति स्म ते ज्ञेया वैष्णवा हि महत्तमाः॥१५॥

नीलाचले ये ये ख्यातास्ते हि ज्ञेया महत्तराः।
दक्षिणादिदिशां याने यैर्यैः सङ्गो महाप्रभोः।
ते ते महान्तो मन्तव्याः परे ज्ञेयाः स्वयोग्यतः॥१६॥

इन (महान्तों) मेंसे श्रीनवद्वीपधाममें श्रीविश्वम्भरके निकट नित्य विलास करनेवालोंको 'महत्तम', श्रीनीलाचलके विख्यात भक्तोंको 'महत्तर' तथा श्रीमन् महाप्रभुकी दक्षिण यात्राके समय जिन-जिनको उनका सङ्ग प्राप्त हुआ था, उन्हें 'महान्त' कहा जाता है। बादमें अर्थात् श्रीमन् महाप्रभुकी अप्रकट-लीलाके उपरान्त भी अन्यान्य अनेक व्यक्ति अपनी-अपनी योग्यतानुसार 'महान्त' नामसे जाने गये हैं॥१५-१६॥

अतः स्वरूपचरणैरुक्तं गौरनिरूपणे।
"पञ्चतत्त्वस्य सम्पर्कात् ये ये ख्याता महत्तमाः।
ते ते महान्तो गोपालाः स्थानाच्छ्रैष्ठ्यादिवाचकाः॥"१७॥

अतएव श्रीगौरतत्त्वका निरूपण करते हुए श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामीने कहा है कि पञ्चतत्त्वके सम्पर्कवशतः जो-जो महत्तम वैष्णवके रूपमें विख्यात हैं, उन महान्तों एवं गोपालोंका महत्तमके रूपमें निरूपण स्थानके श्रेष्ठत्वके[१] कारण हुआ है॥१७॥

([१] इसके लिए अगले पृष्ठपर देखें।)

रसज्ञाः श्रीवृन्दावनमिति यमाहुर्बहुविदो
यमेतं गोलोकं कतिपयजनाः प्राहुरपरे।
सितद्वीपं प्राहुः परमपि परव्योम जगदु-
र्नवद्वीपः सोऽयं जयति परमाश्चर्यमहिमा ॥१८॥

रसतत्त्वविद् व्यक्ति जिसे वृन्दावन, बहुवेत्ता (अनेकानेक शास्त्रोंको जाननेवाले) साधुजन जिसे गोलोक, कतिपय व्यक्ति जिसे श्वेतद्वीप तथा अन्य कोई-कोई जिसे परव्योम कहते हैं, अप्राकृत होनेपर भी इस जगत्में स्थित उसी परम आश्चर्यपूर्ण महिमासे गौरवान्वित सर्वधाम शिरोमणि श्रीनवद्वीपधामकी जय हो॥१८॥

तस्मिन् वासमुरीचकार नृहरिर्विश्वम्भराख्यां दध-
त्तच्चेष्टावशतः समस्तमहतां वसोऽपि तत्राभवत्।
तैः साकं महती हरेरनुगुणाकारापि लीलाभवद्-
यत्रासीज्जगतां मनोऽपि परमानन्दाय मग्नं यतः॥१९॥

इसी श्रीनवद्वीपधाममें नृहरि (नरवपु भगवान् श्रीहरि) ने विश्वम्भर नाम धारणकर वास किया तथा उन श्रीविश्वम्भरकी चेष्टा (क्रिया अथवा इच्छा शक्ति) से ही क्रमशः वहाँ समस्त महत् वैष्णवोंका वास हुआ और उन्हीं महत् वैष्णवोंके साथ श्रीमन् महाप्रभुने श्रीहरिके गुण और आकारके अनुरूप (ऐसी अद्भुत) लीला की, जिससे समस्त जगत्वासियोंका मन भी परमानन्दमें निमग्न हो गया॥१९॥

---

[१] श्रीनवद्वीपधामके श्रीजगन्नाथपुरी एवं अन्यान्य स्थानोंसे श्रेष्ठ होनेके कारण ही वहाँपर रहनेवाले वैष्णवोंको महत्तम कहा गया है, न कि अन्य और किसी कारणसे।

यः सत्ये सितवर्णमादधदसौ श्रीशुक्लनामाभवत्
त्रेतायां मखभुङ्मखाख्य उचितोऽभूद्रक्तवर्णं दधत्।
यः श्यामो दधदास वर्णकममुं श्यामं युगे द्वापरे
सोऽयं गौरविधुर्विभाति कलयन्नामावतारं कलौ॥२०॥

जिन्होंने सत्ययुगमें शुभ्रवर्ण होकर श्रीशुक्ल नाम, त्रेतायुगमें यज्ञकी अग्निके समान रक्तवर्ण होकर मखभुक् अर्थात् यज्ञभुक् नाम तथा द्वापरयुगमें श्यामवर्ण होकर श्याम नाम धारण किया था, वे ही भगवान् कलियुगमें गौरवर्णयुक्त चन्द्रके समान प्रकाशित होकर श्रीगौरचन्द्रके नामसे (श्रीनवद्वीपधाममें) अवतरित हुए हैं॥२०॥

प्रादुर्भूताः कलियुगे चत्वारः साम्प्रदायिकाः।
श्री–ब्रह्म–रुद्र–सनकाह्वयाः पाद्मे यथा स्मृताः।
"अतः कलौ भविष्यन्ति चत्वारः सम्प्रदायिनः।
श्री–ब्रह्म–रुद्र–सनका वैष्णवाः क्षितिपावनाः॥"२१॥

कलियुगमें श्री, ब्रह्म, रुद्र और सनक नामक चार सम्प्रदाय प्रादुर्भूत हुए हैं। इस विषयमें पद्मपुराणमें इस प्रकार लिखा हुआ है—

"अतएव कलियुगमें श्री (रामानुज), ब्रह्म (मध्व), रुद्र (विष्णुस्वामी) और चतुःसन (निम्बादित्य)—इन चार सम्प्रदायोंके वैष्णवजन जगत्को पवित्र करनेवाले होंगे॥"२१॥

श्रीगौड़ीय सम्प्रदायका मध्वानुगत्य

तत्र माध्वीसम्प्रदायः प्रस्तारादत्र लिख्यते।
परव्योमेश्वरस्यासीच्छिष्यो ब्रह्मा जगत्पतिः।

तस्य शिष्यो नारदोऽभूत् व्यासस्तस्याप शिष्यताम्।
शुको व्यासस्य शिष्यत्वं प्राप्तो ज्ञानावरोधनात्।
तस्य शिष्यः प्रशिष्याश्च बहवो भूतले स्थिताः।
व्यासाल्लब्धकृष्णदीक्षो मध्वाचार्यो महायशाः।
चक्रे वेदान् विभाज्यासौ संहितां शतदूषणीम्।
निर्गुणाद्ब्रह्मणो यत्र सगुणस्य परिष्क्रिया॥

तस्य शिष्योऽभवत् पद्मनाभाचार्य-महाशयः।
तस्य शिष्यो नरहरिस्तच्छिष्यो माधवद्विजः।
अक्षोभ्यस्तस्य शिष्योऽभूत्तच्छिष्यो जयतीर्थकः।
तस्य शिष्यो ज्ञानसिन्धुस्तस्य शिष्यो महानिधिः।
विद्यानिधिस्तस्य शिष्यो राजेन्द्रस्तस्य सेवकः।
जयधर्म मुनिस्तस्य शिष्यो यद्गणमध्यतः।
श्रीमद्विष्णुपुरी यस्तु भक्तिरत्नावलीकृतिः।
जयधर्मस्य शिष्योऽभूत् ब्रह्मण्यः पुरुषोत्तमः।
व्यासतीर्थस्तस्य शिष्यो यश्चक्रे विष्णुसंहिताम्।
श्रीमाल्लक्ष्मीपतिस्तस्य शिष्यो भक्तिरसाश्रयः।
तस्य शिष्यो माधवेन्द्रो यद्धर्मोऽयं प्रवर्त्तितः।
कल्पवृक्षस्यावतारो व्रजधामनि तिष्ठतः।
प्रीतप्रेयोवत्सलतोज्ज्वलाख्यफलधारिणः ॥२२॥

यहाँ उन चार सम्प्रदायोंमेंसे श्रीमध्व सम्प्रदायकी परम्पराके विषयमें विस्तारसे वर्णन किया जा रहा है—

परव्योमेश्वर श्रीनारायणके शिष्य जगत्पति ब्रह्मा, ब्रह्माके शिष्य नारद तथा नारदके शिष्य श्रीवेदव्यास हुए। (शुष्क) ज्ञानके अवरोधन (अर्थात् श्रीलवेदव्यासके शिष्योंके मुखसे

भगवान्‌के नाम, रूप, गुण और लीला सम्बन्धी श्लोकोंको श्रवण करनेके उपरान्त पालन किये जा रहे पथमें बाधा पड़ने अर्थात् उसके प्रति अरुचि उत्पन्न होने) के कारण शुकदेवने श्रीव्यासदेवका शिष्यत्व स्वीकार किया। शुकदेव गोस्वामीके जगत्‌में बहुत शिष्य और प्रशिष्य हैं।

महायशस्वी मध्वाचार्यने भी श्रीव्यासदेवसे कृष्णमन्त्रकी दीक्षा प्राप्त की तथा शतदूषणी नामक उस ग्रन्थकी रचना की, जिसमें वेदोंके विचारोंको पृथक्-पृथक् करके[१] निर्गुण ब्रह्मसे सगुण ब्रह्मकी सर्वाङ्ग सुन्दर मीमांसा अर्थात् विचारपूर्वक तत्त्वनिरूपण किया गया है।

श्रीमध्वाचार्यके शिष्य महाशय पद्मनाभाचार्य, पद्मनाभके नरहरि, नरहरिके माधव-द्विज, माधवके प्रिय अक्षोभ्य, अक्षोभ्यके जयतीर्थ, जयतीर्थके ज्ञानसिन्धु, ज्ञानसिन्धुके महानिधि, महानिधिके विद्यानिधि, विद्यानिधिके राजेन्द्र, राजेन्द्रके जयधर्म मुनि हैं। जयधर्मके अनुगत शिष्योंमें श्रीविष्णुपुरी एक प्रधान आचार्य हुए हैं तथा इन्होंने 'भक्ति-रत्नावली' नामक ग्रन्थकी रचना भी की है।

जयधर्मके (एक अन्य) शिष्य पुरुषोत्तम, पुरुषोत्तमके शिष्य ब्रह्मण्यतीर्थ, ब्रह्मण्यतीर्थके शिष्य वे व्यासतीर्थ हुए, जिन्होंने 'विष्णुसंहिता' की रचना की है। वे व्यासतीर्थके शिष्य भक्तिरसके आश्रय लक्ष्मीपति, लक्ष्मीपतिके शिष्य वे श्रीमाधवेन्द्रपुरी हैं, जिनसे प्रेम-भक्तिरूप धर्मका प्रवर्तन हुआ है। अप्राकृत

---

[१] यहाँपर वेदोंके विचारोंको पृथक्-पृथक् करके कहनेका अर्थ वेदोंके विचारोंका मन्थन करनेसे है।

वृन्दावनमें स्थित वह कल्पवृक्ष, जो प्रीत (दास्य), प्रेय (सख्य), वत्सल और उज्ज्वल नामक फल धारण करता है, श्रील माधवेन्द्र पुरी उन्हींके अवतार स्वरूप हैं॥२२॥

तस्य शिष्योऽभवच्छ्रीमानीश्वराख्यपुरी यतिः।
कलयामास शृङ्गारं यः शृङ्गारफलात्मकः॥२३॥

इन्हीं श्रीमाधवेन्द्रपुरीके शिष्य यति श्रीईश्वरपुरीने उस कल्पवृक्षके शृङ्गार फलस्वरूप होकर शृङ्गार रसको प्रकाशित किया॥२३॥

अद्वैतः कलयामास दास्यसख्ये फले उभे।
श्रीमान् रङ्गपुरी ह्येष वात्सल्ये यः समाश्रितः॥२४॥

इन्हीं श्रीमाधवेन्द्रपुरीके शिष्य श्रीअद्वैताचार्यने दास्य और सख्य नामक दो फलोंको प्रकाशित किया तथा श्रीमान् रङ्गपुरीने वात्सल्य रसका भलीभाँति आश्रय किया॥२४॥

ईश्वराख्यपुरीं गौर उररीकृत्य गौरवे।
जगदाप्लावयामास प्राकृताप्राकृतात्मकम्॥२५॥

श्रीगौरचन्द्रने ईश्वरपुरीको गौरवसहित (गुरुरूपमें) वरणकर प्राकृत और अप्राकृतमय जगत्को प्रेममें प्लावित कर दिया॥२५॥

भक्तरूप श्रीगौरहरिका विस्तृत वर्णन

स्वीकृत्य राधिकाभावकान्तिं पूर्वसुदुष्करे।
अन्तर्बहीरसाम्भोधिः श्रीनन्दनन्दनोऽपि सन्॥२६॥

पूर्वमें सुदुष्कर श्रीराधिकाकी भाव-कान्तिको अन्तर और बाहरमें स्वीकारकर रससागर श्रीनन्दनन्दन श्रीचैतन्य महाप्रभुके रूपमें प्रकट हुए॥२६॥

आद्य व्यूहोऽपि चैतन्यमविशत् यः पुरे पुरा।
विचुक्षोभ मनस्तस्य दृष्ट्वा गन्धर्वनर्त्तनम्॥२७॥
द्वारकास्थोऽपि भगवानविशत् श्रीशचीसुतम्।
नानावतारः सुतरामेककाल प्रभावतः॥२८॥
यथा श्यामोऽविशत् कृष्णं भगवन्तं पुरा स्वयम्॥२९॥

जिन आदिव्यूह वासुदेवका पूर्वकालमें गन्धर्वनृत्य देखकर (वैसा नृत्य करनेकी अभिलाषासे) मन व्याकुल हो गया था, उन्होंने (अपनी इस अभिलाषाकी पूर्ति हेतु) श्रीचैतन्य महाप्रभुमें प्रवेश किया। (एक स्वरूपसे) द्वारकामें विराजमान रहनेपर भी उन्होंने श्रीशचीनन्दनमें प्रवेश किया।

अतएव (आदिव्यूहके वासुदेवकी भाँति) अलौकिक शक्तिके प्रभावसे अन्यान्य अवतारोंने भी एक ही समय निश्चित रूपसे श्रीशचीनन्दनमें वैसे ही प्रवेश किया जैसे पूर्वकालमें युगावतार श्यामने स्वयं भगवान् श्रीकृष्णमें प्रवेश किया था॥२७-२९॥

योगमाया-बलादेते तिष्ठन्तोऽन्यत्र यद्यपि।
तथापि प्राविशन् गौरेऽचिन्त्यलक्षणलक्षिताः॥३०॥

यद्यपि अन्यान्य अवतार अपने-अपने धाममें स्थित रहते हैं, तथापि योगमायाके प्रभावसे वे सभी श्रीगौरचन्द्रमें भी

प्रविष्ट होते हैं। यह केवल अचिन्त्य-लक्षणों द्वारा लक्षित होता है॥३०॥

यथोक्तं व्यासचरणैः प्रभासखण्डमध्यतः।
"अचिन्त्याः खलु ये भावा न तांस्तर्केण योजयेत्।" इति॥३१॥

जैसे प्रभासखण्डमें श्रीव्यासदेवने कहा है कि जो तत्त्व अचिन्त्य है, उसे कभी भी तर्कके द्वारा नहीं जाना जा सकता है, अतएव अचिन्त्य-तत्त्वके विषयमें तर्क नहीं करना चाहिये॥३१॥

रघुनाथं प्रविश्यापि यथा तिष्ठति भार्गवः।
एवं श्रीनारदमुखास्तिष्ठन्त्यन्येषु धामसु।
तथैव प्रभुना सार्द्धं दीव्यन्ति श्रुतिदेहवत्॥३२॥

जिस प्रकार परशुराम श्रीरघुनाथमें प्रवेश करनेपर भी पृथक् रूपमें अवस्थित थे, उसी प्रकार (शक्त्यावेशावतार) श्रीनारद आदि भगवान्‌में प्रवेश करनेपर भी अपने धाममें पृथक् रूपसे स्थित रहते हैं।

तथा श्रुतिदेहवत् अर्थात् जिस प्रकार श्रुतियाँ एक स्वरूपसे ब्रह्मलोकमें अवस्थित रहनेपर भी व्रजमें श्रीकृष्णके साथ लीला करती हैं, उसी प्रकार श्रीनारद आदि (पार्षद) अपने एक स्वरूपसे अन्य स्थानपर रहनेपर भी अपने एक भिन्न स्वरूपसे उनके साथ लीला भी करते हैं॥३२॥

किन्तु यद्यद्भक्तगणा यद्यद्भावविलासिनः।
तत्तद्भावानुसारेण व्रजे तेषामभूद्गतिः॥३३॥

किन्तु जिन-जिन भक्तोंने जिस-जिस भावसे (श्रीमन् महाप्रभुके साथ) विलास अर्थात् अपनी निष्ठाका परिचय दिया था, उन्हें उनके उन-उन भावोंके अनुसार व्रजमें गति प्राप्त हुई॥३३॥

गौरचन्द्रोदयेऽद्वैतं प्रति गौरवचो यथा॥
"दास्ये केचन केचन प्रणयिनः सख्ये त एवोभये
राधामाधवनिष्ठया कतिपये श्रीद्वारकाधीशितुः।
सख्यादावुभयत्र केचन परे ये वावतारान्तरे
मय्याबद्धहृदोऽखिलान् वितनवै वृन्दावनासङ्गिनः॥"३४॥

गौरचन्द्रोदय अर्थात् श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटक (१०/७४) में श्रीअद्वैताचार्यके प्रति श्रीगौरचन्द्रने इस प्रकार कहा है—

"भक्तोंमें कोई दास्य, कोई सख्य-भाववाले हैं, कोई दास्य-सख्य दोनोंसे युक्त हैं, कोई राधामाधव निष्ठ, कोई द्वारकाधीश निष्ठ तथा कोई-कोई राम, नृसिंह आदि अन्यान्य अवतारोंके प्रति निष्ठावान् हैं। जो जैसा भी क्यों न हो, मैं इन सभीको ही अपने श्रीचरणोंके प्रति आकर्षित करके प्रीतिरूपी रज्जु द्वारा बाँधकर रखूँगा तथा वृन्दावनके प्रति आसक्तिके भावका दान करूँगा॥"३४॥

पर्जन्यो नाम गोपाल आसीत् कृष्णपितामहः।
उपेन्द्रमिश्रः सन् जातः श्रीहट्टे सप्तपुत्रवान्॥३५॥

व्रजमें जो पर्जन्य नामक गोप श्रीकृष्णके पितामह (दादा) थे, उन्होंने ही श्रीहट्टमें श्रीउपेन्द्र मिश्रके रूपमें जन्म ग्रहण किया है। इनके सात पुत्र हुए॥३५॥

महामान्याभिधा गीपी व्रजे यासीद्वरीयसी।
कृष्ण-पितामही सैव नाम्नात्र कमलावती॥३६॥

जो व्रजमें महामान्या वरीयसी नामक गोपी श्रीकृष्णकी पितामही (दादी) थीं, वे ही इस समय उपेन्द्र मिश्रकी पत्नी कमलावती हुई हैं॥३६॥

पुरा यशोदा-व्रजराजनन्दौ
वृन्दावने प्रेमरसाकरौ यौ।
शची-जगन्नाथपुरन्दराभिधौ
बभूवतुस्तौ न च संशयोऽत्र॥३७॥

पहले वृन्दावनमें जो प्रेमरसके मूर्त्तिमानरूप यशोदा और व्रजराज नन्द थे, उन्होंने ही श्रीशचीदेवी और श्रीजगन्नाथ पुरन्दर होकर जन्म ग्रहण किया है, इसमें किसी प्रकारके सन्देहकी कोई बात नहीं है॥३७॥

अमू अविशतामेव देवावदिति-कश्यपौ।
श्रीकौशल्या-दशरथौ तथा श्रीपृश्नि-तत्पती॥३८॥

श्रीअदिति और कश्यप नामक देवगण, कौशल्या और दशरथ तथा पृश्नि और सुतपा भी इन्हींमें प्रविष्ट हुए हैं॥३८॥

देवकी-वसुदेवौ यौ पितरौ राम-कृष्णयोः।
तावप्यमू अविशतामिति जल्पन्ति केचन।
अन्यथा राममूर्तेः श्रीविश्वरूपस्य नोद्भवः॥३९॥

कोई-कोई कहते हैं कि श्रीरामकृष्णके माता और पिता देवकी तथा वसुदेव भी इनमें प्रविष्ट हुए हैं, अन्यथा इनसे

राममूर्त्ति अर्थात् श्रीबलदेव (के अंश श्रीसङ्कर्षण) स्वरूप श्रीविश्वरूपका जन्म नहीं हो सकता था॥३९॥

रोहिणी-वसुदेवौ यौ पितरौ राम-कृष्णयोः।
पद्मावती-मुकुन्दौ तौ सन्तौ जातौ द्विजोत्तमौ।
श्रीसुमित्रा-दशरथौ तावप्यविशताममू॥४०॥

श्रीरोहिणी और श्रीवसुदेव, जो श्रीरामकृष्णके माता-पिता थे, उन्होंने ही सन्त स्वभाववाले पद्मावती और मुकुन्द (हाड़ाई पण्डित) के रूपमें उत्तम ब्राह्मणकुलमें जन्म ग्रहण किया है तथा सुमित्रा और दशरथ भी इनमें प्रविष्ट हुए हैं॥४०॥

पौर्णमासी व्रजे यासीत् गोविन्दानन्दकारिणी।
आचार्य श्रील गोविन्दो गीत-पद्यादिकारकः॥४१॥

व्रजमें श्रीगोविन्दको आनन्द प्रदान करनेवाली पौर्णमासी अब गीत और पद्यों आदिकी रचना करनेवाले श्रीगोविन्द आचार्य हैं॥४१॥

नाम्नाम्बिका व्रजे धात्री स्तन्यदात्री स्थिता पुरा।
सैवेऽयं मालिनीनाम्नी श्रीवासगृहिणीमता॥४२॥

पूर्वकालमें श्रीकृष्णको स्तनपान करानेवाली अम्बिका नामक धात्री अब श्रीवास पण्डितकी पत्नी मालिनी हैं॥४२॥

अम्बिकायाः स्वसा यासीन्नाम्नी श्रील किलिम्बिका।
कृष्णोच्छिष्टं प्रभुञ्जाना सेयं नारायणीमता॥४३॥

श्रीकृष्णका उच्छिष्ट भोजन खानेवाली अम्बिकाकी बहन किलिम्बिका अब (श्रीवास पण्डितकी भतीजी) श्रीनारायणी देवी हैं॥४३॥

पुरासीज्जनको राजा मिथिलाधिपतिर्महान्।
अधुना वल्लभाचार्यो भीष्मकोऽपि च सम्मतः॥४४॥

मिथिला अधिपति महान् राजा जनक अब श्रीवल्लभाचार्य हैं। कोई-कोई इन्हें (श्रीरुक्मिणीके पिता) भीष्मक भी कहते हैं॥४४॥

श्रीजानकी रुक्मिणी च लक्ष्मीनाम्नी च तत्सुता।
चैतन्यचरिते व्यक्ता लक्ष्मीनाम्नी च सा यथा॥४५॥

"सा वल्लभाचार्यसुता चलन्ती
स्नातुं सखीभिः सुरदीर्घिकायाम्।
लक्ष्मीरनेनैव कृतावतारा
प्रभोर्ययौ लोचनवर्त्म तत्र॥"४६॥

श्रीजानकी और श्रीरुक्मिणी एक साथ मिलकर श्रीवल्लभाचार्यकी पुत्री श्रीलक्ष्मी अर्थात् लक्ष्मीप्रियादेवी हुईं हैं। इन्हीं श्रीलक्ष्मीप्रियाके विषयमें श्रीचैतन्यचरित महाकाव्यके तृतीय सर्गके सातवें श्लोकमें कहा गया है कि श्रीवल्लभाचार्यकी कन्या श्रीलक्ष्मीप्रियादेवी, जो स्वयं लक्ष्मीका अवतार हैं, जिस समय वे सखियोंके साथ गङ्गा-स्नानके लिए जा रही थीं, तभी अकस्मात् श्रीमन् महाप्रभुकी दृष्टि उन पर पड़ी॥४५-४६॥

श्रीसनातनमिश्रोऽयं पुरा सत्राजितो नृपः।
विष्णुप्रिया जगन्माता यत् कन्या भू-स्वरूपिणी॥४७॥

पूर्वकालके सत्राजित राजा अब श्रीसनातन मिश्र हैं तथा भू-शक्ति स्वरूपिणी जगत् माता श्रीविष्णुप्रियादेवी इन्हींकी कन्या हैं। (कहनेका तात्पर्य यह है कि सत्राजितकी कन्या श्रीसत्यभामा ही श्रीविष्णुप्रियादेवी हैं)॥४७॥

उक्ता प्रसङ्गात् कलिना श्रीचैतन्यविधूदये।
"भुवोऽंशरूपामपराञ्च विष्णुप्रियेति
वित्तां परिणीय कान्ताम्।" इत्यादि॥४८॥

श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकके प्रथम अङ्कके सैंतीसवें श्लोकमें कलिने प्रसङ्गवशतः कहा है कि देवदेव श्रीशचीनन्दनने अपनी एक अन्य शक्ति भू-देवीकी अंशरूपिणी श्रीविष्णुप्रिया-देवीके साथ विवाह किया इत्यादि॥४८॥

विश्वामित्रोऽपि घटकः श्रीरामोद्वाहकर्मणि।
रुक्मिण्या प्रेषितो विप्रो यश्च श्रीकेशवं प्रति।
तावरं वनमाली यत्कर्मणाचार्यतां गतः॥४९॥

श्रीरामचन्द्रके विवाहमें घटक अर्थात् विवाहके संयोजकका कार्य करनेवाले विश्वामित्र और श्रीरुक्मिणीदेवी द्वारा श्रीकृष्णके निकट भेजे गये ब्राह्मण—इन दोनोंने मिलकर वनमाली नामसे जन्म लेकर कर्मके द्वारा अर्थात् घटकका कार्य करने हेतु आचार्यत्वको प्राप्त किया है॥४९॥

यश्च सत्राजिता विप्रः प्रहितो माधवं प्रति।
सत्योद्वाहाय कुलकः श्रीकाशीनाथ एव सः ॥५०॥

राजा सत्राजित द्वारा सत्यभामाके विवाहके लिए माधवके निकट भेजे गये कुलक नामक ब्राह्मण अब श्रीकाशीनाथ हैं॥५०॥

केनावान्तरभेदेन भेदं कुर्वन्ति सात्वताः।
सत्यभामाप्रकाशोऽपि जगदानन्दपण्डितः॥५१॥

भगवद्भक्त जन किसी अवान्तर भेदसे अर्थात् उपरोक्त विचार परम्परासे हटकर सत्यभामाके विषयमें (सत्यभामा विष्णुप्रिया हैं—इस) पूर्वोक्त विचारसे भेद करते हुए कहते हैं कि श्रीजगदानन्द पण्डित श्रीसत्यभामाके प्रकाश हैं॥५१॥

मथुरायां यज्ञसूत्रं पुरा कृष्णाय यो मुनिः।
ददौ सान्दीपनिः सोऽभूदद्य केशवभारती॥५२॥

पूर्वकालमें मथुरामें श्रीकृष्णका यज्ञोपवीत संस्कार करानेवाले[१] श्रीसान्दीपनि मुनि अब श्रीकेशव भारती हैं॥५२॥

पुरासीद्रघुनाथस्य यो वशिष्ठमुनिर्गुरुः।
स प्रकाशविशेषेण गङ्गादास-सुदर्शनौ॥५३॥

पूर्वकालमें श्रीवशिष्ठ मुनि नामक श्रीरामचन्द्रके गुरु ही अब प्रकाश भेदसे गङ्गादास और सुदर्शन हैं॥५३॥

---

[१] श्रीमद्भागवतके अनुसार श्रीगर्गाचार्य और अन्यान्य ब्राह्मणोंने मथुरामें श्रीकृष्णका यज्ञोपवीत संस्कार कराया था तथा उसके उपरान्त श्रीसान्दीपनि मुनिने श्रीकृष्णको चौंसठ कलाओंका अध्ययन कराया था।

वृषभानुतया ख्यातः पुरा यो व्रजमण्डले।
अधुना पुण्डरीकाक्षं विद्यानिधिमहाशयः॥५४॥

पूर्वकालमें श्रीव्रजमण्डलके विख्यात श्रीवृषभानु महाराज अब पुण्डरीक विद्यानिधि नामक महाशय हैं॥५४॥

स्वकीयभावमास्वाद्य राधाविरहकातरः।
चैतन्यः पुण्डरीकाह्वये तातावदत् स्वयम्॥५५॥

प्रेमनिधितया ख्यातिं गौरो यस्मै ददौ सुखी।
माधवेन्द्रस्य शिष्यत्वात् गौरवञ्च सदाकरोत्॥५६॥

श्रीचैतन्य महाप्रभु अपने भाव अर्थात् श्रीकृष्णके विरहमें कातर श्रीराधाके भावका आस्वादन करते हुए स्वयं श्रीपुण्डरीक विद्यानिधिको पिता कहकर सम्बोधन करते थे। श्रीपुण्डरीक विद्यानिधि श्रीगौरचन्द्र द्वारा परम प्रसन्नतापूर्वक दी गयी उपाधि प्रेमनिधिके नामसे भी विख्यात थे।

इन्हें श्रील माधवेन्द्रपुरीपादका शिष्य जानकर श्रीगौरहरि सदैव गौरव प्रदान करते थे॥५५-५६॥

तत्प्रकाशविशेषोऽपि मिश्रः श्रीमाधवो मतः।
रत्नावतीतु तत्पत्नी कीर्त्तिदा कीर्त्तिता बुधैः॥५७॥

ऐसा माना जाता है कि श्रीमाधव मिश्र भी श्रीवृषभानु महाराजके ही प्रकाश विशेष हैं। इनकी पत्नी रत्नावतीको पण्डितजन श्रीवृषभानु महाराजकी पत्नी श्रीकीर्त्तिदा कहते हैं॥५७॥

भक्त-स्वरूप श्रीनित्यानन्द प्रभुका विस्तृत वर्णन

(मूलतः श्रीशचीनन्दन गौरहरि व्रजेन्द्रनन्दन श्रीकृष्ण, श्रीनित्यानन्द प्रभु साक्षात् बलदेव तथा विश्वरूप श्रीबलदेव प्रभुके अंश साक्षात् सङ्कर्षण हैं। अतएव अंश और अंशीमें अभेदकी बातको स्मरण रखते हुए ही श्लोक संख्या अट्ठावनसे चौसठ तक का पाठ करना चाहिये।)

अंश-अंशिनोरभेदेन व्यूह आद्यः शचीसुतः।
बलदेवो विश्वरूपो व्यूहः सङ्कर्षणो मतः॥५८॥
नित्यानन्दावधूतश्च प्रकाशेन स उच्यते॥५९(क)॥

अंश और अंशीमें अभेद होनेके कारण आद्यव्यूह श्रीवासुदेवको श्रीशचीनन्दन माना जाता है। बलदेवके सङ्कर्षण व्यूहको ही विश्वरूप (श्रीचैतन्य महाप्रभुके बड़े भाई) माना जाता है। वे सङ्कर्षण ही प्रकाशभेदसे अवधूत श्रीनित्यानन्द कहे जाते हैं॥५८-५९(क)॥

गौरचन्द्रोदये धर्मं प्रति वाक्यं कलेर्यथा॥५९(ख)॥

श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकके प्रथम अङ्कके अड़तीसवें तथा इक्कतीसवें श्लोकमें धर्मके प्रति कलिने इस प्रकार कहा है— ॥५९(ख)॥

"अस्याग्रजस्त्वकृतदारपरिग्रहः सन्
सङ्कर्षणः स भगवान् भुवि विश्वरूपः।
स्वीयं महः किल पुरीश्वरमापयित्वा
पूर्वं परिव्रजित एव तिरोबभूव॥"इति॥६०॥

"जगत्‌में श्रीविश्वरूपके नामसे विख्यात श्रीगौरहरिके अग्रज (बड़े भाई) साक्षात् सङ्कर्षण हैं। इन्होंने विवाहसे पूर्व ही संन्यास ग्रहण किया था तथा तीर्थ भ्रमण करते समय अपने तेजको श्रीपरमानन्द पुरीमें[१] (धरोहरकी भाँति) स्थापित करके अन्तर्द्धान हो गये॥"६०॥

"नित्यानन्दावधूतो मह इति महितम्
हन्त सङ्कर्षणं यः।" इति च॥६१॥

और, "ब्रह्मादिके द्वारा पूजित महातेजोमय श्रीसङ्कर्षण ही अवधूत श्रीनित्यानन्द प्रभु हैं।" इत्यादि॥६१॥

यदा श्रीविश्वरूपोऽयं तिरोभूतः सनातनः।
नित्यानन्दावधूतेन मिलित्वापि तदा स्थितः॥६२॥

इसलिए अपने अन्तर्धानके समय सनातन श्रीविश्वरूप श्रीनित्यानन्द अवधूतसे मिलकर उनके शरीरमें विराजमान हो गये॥६२॥

ततोऽवधूतो भगवान् बलात्मा
भवन् सदा वैष्णववर्गमध्ये।

---

[१] मूल श्लोकमें 'पुरीश्वर' शब्दका प्रयोग श्रीपरमानन्द पुरीके लिए किया गया है, न कि श्रीईश्वर पुरीके लिए। इसका प्रमाण श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकके अष्टम अङ्कके नौवें श्लोकमें मिलता है, जिसमें स्वयं श्रीमन् महाप्रभु इस प्रसङ्गका वर्णन करते हुए कहते हैं—"अहो! परमानन्दपुरीश्वर-स्तावन्मुनीन्द्रमाधवपुरीश्वरशिष्यः, यत्र खल्वग्रजस्य विश्वरूपस्य समग्रमैश्वरं तेजः प्रविष्टम्।" अर्थात् अहो! जो श्रील माधवेन्द्र-पुरीश्वरके शिष्यके रूपमें विख्यात हैं, जिनमें अग्रज श्रीविश्वरूपका समग्र ऐश्वरिक तेज प्रविष्ट हुआ है, वही परमानन्द पुरीश्वर उपस्थित हुए हैं।

जज्वाल तिग्मांशुसहस्रतेजा
इति ब्रुवन् मे जनको ननर्त्त॥६३॥

"तदनन्तर अर्थात् श्रीविश्वरूप प्रभुके श्रीनित्यानन्द प्रभुके शरीरमें प्रवेश करनेके उपरान्त श्रीबलदेव स्वरूप भगवान् अवधूत श्रीनित्यानन्द प्रभु, वैष्णवोंके बीचमें सहस्र-सहस्र सूर्यकी भाँति तेजोविशिष्ट होकर देदीप्यमान होने लगे"—ऐसा कहते हुए मेरे पूज्य पिता श्रीशिवानन्द सेनने नृत्य किया था॥६३॥

स्वांशेन शेषेण य एव शय्या
विष्णोश्च कृष्णस्य च वासभूषा।
स्वाङ्गस्य भूषावलयादिरूपै-
र्लीलाख्यया वेद निगूढलीलाम्॥६४॥

जो श्रीबलदेव प्रभु अपने अंश शेष स्वरूपसे श्रीविष्णुकी शय्या और वस्त्र-आभूषण होकर सेवा करते हैं तथा 'लीला' नामक शक्तिके प्रभावसे श्रीकृष्णके अङ्गोंपर वलय-अलङ्कार आदि रूपोंको धारण करनेके कारण उनकी निगूढ़ लीलाओंसे अवगत होते हैं, वे ही अब श्रीनित्यानन्द प्रभु हैं॥६४॥

श्रीवारुणी-रेवतवंशसम्भवे
तस्य प्रिये द्वे वसुधा च जाह्नवी।
श्रीसूर्यदासस्य महात्मनः सुते
ककुद्मिरूपस्य च सूर्यतेजसः॥६५॥

श्रीबलदेवकी पत्नियाँ श्रीवारुणीदेवी और रेवतवंशमें उत्पन्न श्रीरेवतीदेवी अब श्रीनित्यानन्द प्रभुकी पत्नियाँ श्रीवसुधा

और श्रीजाह्नवा हैं। ये दोनों सूर्यके समान तेजस्वी महात्मा श्रीसूर्यदास (सरखेल) की कन्याएँ हैं। ये सूर्यदास पहले रेवतीके पिता कुकुद्मी थे॥६५॥

केचित् श्रीवसुधादेवीं कलावपि विवृण्वते।
अनङ्गमञ्जरीं केचिज्जाह्नवीञ्च प्रचक्षते।
उभयन्तु समीचीनं पूर्वन्यायात् सतां मतम्॥६६॥

कलियुगमें कोई-कोई व्यक्ति श्रीवसुधादेवीको तथा कोई-कोई श्रीजाह्नवादेवीको अनङ्गमञ्जरी कहते हैं। महात्माओंके मतसे पूर्व कथित न्याय अर्थात् प्रकाश भेदके अनुसार दोनों विचार ही उचित हैं॥६६॥

सङ्कर्षणस्य यो व्यूहः पयोब्धिशायिनामकः।
स एव वीरचन्द्रोऽभूच्चैतन्याभिन्नविग्रहः॥६७॥
अमुं प्राविशतां कार्यात् सहजौ निशठोल्मुकौ॥६८(क)॥

श्रीसङ्कर्षणका पयोब्धिशायी अर्थात् क्षीरोदकशायी नामक व्यूह ही अब श्रीचैतन्य महाप्रभुसे अभिन्न विग्रह (श्रीनित्यानन्द आत्मज) श्रीवीरचन्द्र प्रभु हैं। निशठ और उल्मुख[१] नामक दो सहोदर भाइयोंने भी किसी कारणवश इनमें प्रवेश किया है॥६७-६८ (क)॥

मीनकेतनरामादिव्यूहः सङ्कर्षणोऽपरः॥६८(ख)॥

मीनकेतन रामदास आदिव्यूह-सङ्कर्षणके अन्य रूप अर्थात् प्रकाश हैं॥६८(ख)॥

---

[१] श्रीबलदेव प्रभुके दो पुत्र।

विष्णुपादोद्भवा गङ्गा यासीत् सा निजनामतः।
नित्यानन्दात्मजा जाता माधवः शान्तनुर्नृपः॥६९॥

श्रीविष्णुके चरणकमलोंसे निकली हुई भगवती गङ्गा अब अपने गङ्गा नामसे ही श्रीनित्यानन्द प्रभुकी कन्या हुई हैं। इनके पति श्रीमाधव (चट्टोपाध्याय) पहले महाराज शान्तनु थे॥६९॥

व्यूहस्तृतीयः प्रद्युम्नः प्रियनर्मसखोऽभवत्।
चक्रे लीलासहायं यो राधा-माधवयोर्व्रजे।
श्रीचैतन्याद्वैततनुः स एव रघुनन्दनः॥७०॥

व्रजमें जो श्रीकृष्णके प्रियनर्म सखा होकर श्रीराधामाधवकी लीलामें सहायता करते थे तथा जो चतुर्व्यूहमें तृतीय श्रीप्रद्युम्न हैं, वे ही अब श्रीचैतन्यकी अभिन्न देह-स्वरूप श्रीरघुनन्दन हैं॥७०॥

व्यूहस्तुर्योऽनिरुद्धो यः स वक्रेश्वरपण्डितः।
कृष्णावेशज नृत्येन प्रभोः सुखमजीजनत्॥७१॥

सहस्रगायकान्मह्यं देहि त्वं करुणामय।
इति चैतन्यपादे य उवाच मधुरं वचः॥७२॥

स्व प्रकाशविभेदेन शशिरेखा तमाविशत्॥७३(क)॥

चतुर्व्यूहके चतुर्थ श्रीअनिरुद्ध अब वक्रेश्वर पण्डित हैं। ये कृष्णाविष्ट चित्त होकर नृत्य करके श्रीचैतन्य महाप्रभुका सुख सम्पादन करते थे। इन्होंने श्रीचैतन्य महाप्रभुको मधुर वचनोंसे इस प्रकार कहा था—हे करुणामय! आप मुझे एक हजार गायक प्रदान कीजिये।

अपने प्रकाश भेदसे (श्रीराधिकाकी प्रिय सखी) श्रीशशिरेखाने भी इनमें प्रवेश किया है॥७१-७३(क)॥

आविर्भावो गौरहरेर्नकुल-ब्रह्मचारिणि॥७३(ख)॥
आवेशश्च तथा ज्ञेयो मिश्रे प्रद्युम्नसंज्ञके॥७४(क)॥

श्रीनकुल ब्रह्मचारीमें श्रीगौरहरिका आविर्भाव और श्रीप्रद्युम्न मिश्रमें उनका आवेश जानना चाहिये[१]॥७३(ख)-७४(क)॥

आचार्यो भगवान् खञ्जः कला गौरस्य कथ्यते॥७४(ख)॥

भगवान् आचार्य खञ्ज (पङ्गु) को श्रीगौराङ्गदेवकी कला कहा जाता है॥७४(ख)॥

गोपीनाथाचार्यनाम्ना ब्रह्मा ज्ञेयो जगत्पतिः।
नवव्यूहे तु गणितो यस्तन्त्रे तन्त्रवेदिभिः॥७५॥

---

[१] (मतान्तरमें) श्रीचैतन्यचरितामृत अन्त्य लीला द्वितीय अध्यायके सत्रहवें तथा छटें पयारमें श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामीने वर्णन किया है कि—

गौड़देशे लोक निस्तारिते मन हैल।
नकुल हृदय प्रभु 'आवेश' करिल॥

अर्थात् जब श्रीमन् महाप्रभुके मनमें गौड़देशवासी लोगोंका उद्धार करनेकी इच्छा हुई तब उन्होंने श्रीनकुल ब्रह्मचारीके हृदय (देह) में अपना 'आवेश' प्रदान किया।

प्रद्युम्न-नृसिंहानन्द आगे कैला 'आविर्भाव'।
लोक निस्तारिब—ऐई ईश्वर-स्वभाव॥

अर्थात् "मैं जगत्वासियोंका उद्धार करूँगा"—अपने इसी ईश्वर-स्वभावके कारण श्रीमन् महाप्रभुने श्रीनृसिंहानन्द ब्रह्मचारीके नामसे भी प्रसिद्ध श्रीप्रद्युम्नके समक्ष आविर्भूत होकर लोगोंका उद्धार किया।

तन्त्रविद्‌गण जिन जगत्‌पति ब्रह्माकी तन्त्रमें वर्णित नवव्यूहके अन्तर्गत गणना करते हैं, वे ही अब श्रीगोपीनाथ आचार्य हैं॥७५॥

भक्तावतार श्रील अद्वैताचार्यका विस्तृत वर्णन

व्रजे आवेशरूपत्वाद्व्यूहो योऽपि सदाशिवः।
स एवाद्वैतगोस्वामी चैतन्याभिन्नविग्रहः॥७६॥

व्रजमें सदाशिवके जो आवेशरूप व्यूह हैं, वे ही अब श्रीचैतन्य महाप्रभुके अभिन्न विग्रह श्रीअद्वैत गोस्वामी हैं॥७६॥

(व्रजमें सदाशिवके आवेशरूप व्यूहका विस्तारसे वर्णन)

यश्च गोपालदेहः सन् व्रजे कृष्णस्य सन्निधौ।
ननर्त्त श्रीशिवतन्त्रे भैरवस्य वचो यथा॥७७॥

(श्रीसदाशिवने अपने आवेशरूप व्यूह अर्थात्) गोपालरूपसे व्रजमें श्रीकृष्णके समीप नृत्य किया था। इसका वर्णन श्रीशिवतन्त्रमें भैरवने इस प्रकार किया हैं—॥७७॥

"एकदा कार्त्तिके मासि दीपयात्रा-महोत्सवे।
सरामः सहगोपालः कृष्णोऽनृत्यत् यत्नवान्॥७८॥

एक समय कार्त्तिक मासके दीपावली महोत्सवके दिन श्रीबलराम और गोपबालकोंके साथ श्रीकृष्ण यत्नपूर्वक नृत्य कर रहे थे॥७८॥

निरीक्ष्य मद्‌गुरुदेवो गोपभावाभिलाषवान्।
प्रियेण नर्त्तितुमारब्धश्चक्रभ्रमण-लीलया॥७९॥

जिसे देखकर मेरे गुरुदेव श्रीसदाशिवने गोपभाव अभिलाषी होकर श्रीकृष्णकी प्रिय चक्रभ्रमण-लीला अर्थात् अलात्चक्रवत्[१] नृत्य द्वारा उनके निकट नृत्य करना आरम्भ कर दिया॥७९॥

श्रीकृष्णस्य प्रसादेन द्विविधोऽभूत् सदाशिवः।
एकस्तत्र शिवः साक्षादन्यो गोपालविग्रहः॥"८०॥

श्रीकृष्णकी कृपासे श्रीसदाशिव दो प्रकारके हो गये—(१) साक्षात् शिव तथा (२) गोपाल अर्थात् गोप बालक विग्रह। (यही गोप बालक विग्रह ही सदाशिवका व्रजमें आवेशरूप व्यूह है जो गौर लीलामें श्रीअद्वैताचार्य हुए हैं)॥८०॥

श्रील अद्वैताचार्यके पिता श्रीकुबेर पण्डितका पूर्व इतिहास

महादेवस्य मित्रं यः कुवेरो गुह्यकेश्वरः।
कुवेरपण्डितः सोऽद्य जनकोऽस्य दिगम्बरः[२]॥८१॥

दिगम्बर महादेवके मित्र गुह्यकेश्वर अर्थात् गुह्यकोंके ईश्वर कुबेर अब श्रीअद्वैताचार्यके पिता श्रीकुबेर पण्डित हैं॥८१॥

पुरा कुवेरः कैलासे सिद्धसाध्यनिषेविते।
जजाप परमं मन्त्रं शैवं श्रीशिववल्लभः॥८२॥

पूर्वकालमें श्रीशिवके परमप्रिय कुबेरने सिद्ध[३] और

---

[१] किसी जलती हुई लकड़ीको अत्यधिक वेगपूर्वक घुमानेसे बन जानेवाला घेरा अलातचक्र कहलाता है।

[२] पाठभेद विदाम्बरः

[३] एक प्रकारके देवता

साध्य[१] जनों द्वारा परिसेवित कैलासमें शिव-सम्बन्धीय परम मन्त्रका जप किया था॥८२॥

ततो दयालुर्भगवान् वरं वृण्विति सोऽब्रवीत्।
तदा कुवेरो वरयामास त्वं मे सुतो भव॥८३॥

तदनन्तर अर्थात् कुछ समयके उपरान्त जब दयालु भगवान् श्रीशिवने कुबेरको कहा कि तुम मुझसे कोई वर माँगो, तब कुबेरने वर माँगा कि आप मेरे पुत्रके रूपमें प्रकट हों॥८३॥

प्रार्थितस्तेन देवेशो वरदेशः सदाशिवः।
जन्मन्यन्तरे पुत्रः प्राप्स्यामि पुत्रतां तव॥८४॥

कुबेरके द्वारा इस प्रकार प्रार्थना किये जानेपर वरदान देनेमें श्रेष्ठ देवेश सदाशिवने कहा—हे पुत्र! अगले जन्ममें मैं तुम्हारा पुत्र होऊँगा॥८४॥

इति प्राप्य वरं कष्टं कियन्तं कालमास्थितः।
कार्यादीशवशात् सोऽद्याद्वैतस्य जनकोऽभवत्॥८५॥

इस प्रकार वर प्राप्त करके कुबेरने कुछ समय तक (अपने भावी जन्मकी अपेक्षा करते हुए) कष्टसे जीवन व्यतीत किया तथा ईश्वराधीन कार्य (इच्छा) के अनुसार वे अब श्रीअद्वैताचार्यके पिता हुए हैं॥८५॥

योगमाया भगवती गृहिणी तस्य साम्प्रतम्।
सीतारूपेणावतीर्णा श्रीनाम्ना तत्प्रकाशतः॥८६॥

---

[१] रुद्रके अनुचरगण देवता

योगमाया भगवती अब श्रीअद्वैताचार्यकी पत्नी श्रीसीतादेवी हैं तथा योगमाया भगवतीका प्रकाश ही श्रीअद्वैताचार्यकी दूसरी पत्नी श्रीदेवी हैं॥८६॥

तस्य पुत्रोऽच्युतानन्दः कृष्णचैतन्यवल्लभः।
श्रीमत् पण्डितगोस्वामि शिष्यः प्रिय इति श्रुतम्॥८७॥

श्रीअद्वैताचार्यके पुत्र श्रीअच्युतानन्द श्रीकृष्णचैतन्यके अतिशय प्रिय, श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामीके शिष्य तथा श्रीअद्वैताचार्यके प्रिय पुत्रके रूपमें प्रसिद्ध हैं॥८७॥

यः कार्त्तिकेयः प्रागासीदिति जल्पन्ति केचन।
केचिदाहू रसविदोऽच्युतानाम्नी तु गोपिका॥
उभयन्तु समीचीनं द्वयोरेकत्र सङ्गतात्।
कार्त्तिकेयः कृष्णमिश्रस्तत् साम्यादिति केचन॥८८॥

किसी-किसीका कहना है कि कार्त्तिकेय ही अच्युतानन्द हैं, परन्तु अन्यान्य किन्हीं रसविदोंका कहना है कि व्रजकी अच्युता नामक गोपी ही अब अच्युतानन्द हैं। ये दोनों ही विचार ठीक हैं, क्योंकि कार्त्तिकेय और अच्युता नामक गोपी मिलकर ही श्रीअच्युतानन्द हुए हैं।

कार्त्तिकेय और श्रीकृष्ण मिश्रमें समानताके कारण कोई-कोई श्रीकृष्ण मिश्रको भी कार्त्तिकेय कहते हैं॥८८॥

नन्दिनी जङ्गली ज्ञेया जया च विजया क्रमात्॥८९॥

जया और विजया क्रमशः श्रीसीतादेवीकी परिचारिका और शिष्या नन्दिनी तथा जङ्गली हुई हैं॥८९॥

भक्ताख्य अर्थात् शुद्धभक्त श्रीवास पण्डित आदिका विस्तृत विवरण

श्रीवासपण्डितो धीमान् यः पुरा नारदो मुनिः।
पर्वताख्यो मुनिवरो य आसीन्नारदप्रियः।
स रामपण्डितः श्रीमांस्तत् कनिष्ठसहोदरः॥९०॥

पूर्वकालके श्रीनारद मुनि ही अब बुद्धिमान् श्रीवास पण्डित हैं तथा श्रीनारदके अत्यन्त प्रिय श्रीपर्वत नामक श्रेष्ठ मुनि ही अब श्रीवास पण्डितके कनिष्ठ भ्राता श्रीमान् राम पण्डित हैं॥९०॥

मुरारिगुप्तो हनुमानङ्गदः श्रीपुरन्दरः।
यः श्रीसुग्रीवनामासीद्गोविन्दानन्द एव सः॥९१॥

श्रीहनुमान ही अब मुरारि गुप्त, अङ्गद ही श्रीपुरन्दर पण्डित तथा महाराज सुग्रीव ही श्रीगोविन्दानन्द हैं॥९१॥

विभीषणो यः प्रागासीद्रामचन्द्रपुरी स्मृतः।
उवाचातो गौरहरिर्नैतद्रामस्य कारणम्॥

जटिला राधिका श्वश्रूः कार्यतोऽविशदेव तम्।
अतो महाप्रभुर्भिक्षासङ्कोचादि ततोऽकरोत्॥९२॥

जो पहले विभीषण थे, अब वे ही रामचन्द्र पुरी हैं (ऐसा सुनकर कोई कह सकता है कि यह कैसे सम्भवपर है, तो इसके लिए कह रहे हैं कि उन्होंने श्रीमन् महाप्रभु एवं उनके परिकरोंके साथ जैसा व्यवहार किया वह केवल इसलिए, क्योंकि) श्रीमती राधिकाकी सास जटिला किसी

कारणवश इनमें प्रविष्ट हुई थी। (इसके प्रमाण स्वरूप कह रहे हैं कि) श्रीगौरहरिने स्वयं भी कहा था कि भक्तोंके साथ ऐसा व्यवहार करनेका कारण श्रीरामचन्द्र पुरी नहीं है, (जो कि विभीषण हैं) बल्कि श्रीराधाजीकी सास जटिला है। इसलिए श्रीमन् महाप्रभुने भिक्षा ग्रहण करनेमें संकोच इत्यादि किया॥९२॥

ऋचीकस्य मुनेः पुत्रो नाम्ना ब्रह्मा महातपाः।
प्रह्लादेन समं जातो हरिदासाख्यकोऽपि सन्॥९३॥

ऋचीक मुनिके पुत्र महातपा-ब्रह्मा श्रीप्रह्लादके साथ मिलकर अब श्रीहरिदास ठाकुर कहलाते हैं॥९३॥

मुरारिगुप्तचरणैश्चैतन्यचरितामृते।
उक्तो मुनिसुतः प्रातस्तुलसीपत्रमाहरण्॥९४॥
अधौतमभिशप्तस्तं पित्रा यवनतां गतः।
स एव हरिदासः सन् जातः परमभक्तिमान्॥९५॥

श्रीमुरारि गुप्त द्वारा रचित श्रीचैतन्यचरितामृत[१] ग्रन्थमें कहा गया है कि किसी एक मुनिकुमारने एक दिन प्रातःकाल तुलसी पत्र चयन करके, उन्हें धोये बिना ही अपने पिताको अर्पित कर दिये थे। इसी कारण उनके पिताने उन्हें यवन होनेका अभिशाप दिया था।

अपने पिता द्वारा अभिशप्त उन्हीं मुनिकुमारने ही (यवनकुलमें उत्पन्न) परम भक्तिमान श्रीहरिदास ठाकुरके रूपमें जन्मग्रहण किया है॥९४-९५॥

[१] वर्त्तमान समयमें यह ग्रन्थ श्रीचैतन्यचरितके नामसे प्रसिद्ध है।

वृन्दावने याः प्रागासन्नणिमाद्यष्टसिद्धयः।
ता एवाष्टौ भक्तरूपा भूता गौड़े च ते यथा॥९६॥

अनन्तश्च सुखानन्दो गोविन्दो रघुनाथकः।
कृष्णानन्दः केशवश्च श्रीदामोदर-राघवौ।
पुर्युपाधिक्रमाज्ज्ञेया अणिमाद्यष्टसिद्धयः॥९७॥

पूर्वकालमें श्रीवृन्दावनमें जो अणिमा आदि अष्टसिद्धियाँ[१] थीं, उन्होंने गौड़देशमें आठ भक्तोंके रूपमें जन्म ग्रहण किया है। क्रमसे उन आठोंके नाम इस प्रकार हैं, यथा—

अनन्त, सुखानन्द, गोविन्द, रघुनाथ, कृष्णानन्द, केशव, दामोदर और राघव। ये आठों 'पुरी' उपाधिसे युक्त थे॥९६-९७॥

जायन्तेयाः स्थिता ऊर्ध्वरेतसः समदर्शिनः।
नव भागवताः पूर्वं श्रीभागवतसंहिताः॥९८॥

प्रत्यूचुर्जनकं तेऽद्य भूत्वा सन्न्यासिनः सदा।
प्रभुना गौरहरिणा विहरन्ति स्म ते यथा॥९९॥

श्रीनृसिंहानन्दतीर्थः श्रीसत्यानन्दभारती।
श्रीनृसिंह-चिदानन्द-जगन्नाथा हि तीर्थकाः॥१००॥

तीर्थाभिधो वासुदेवः श्रीरामः पुरुषोत्तमः।
गरुडाख्यावधूतश्च श्रीगोपेन्द्राख्य आश्रमः॥१०१॥

पूर्वकालमें राजा जनकको श्रीभागवत संहिताका श्रवण करानेवाले जयन्तीके ऊर्ध्वरेताः अर्थात् ब्रह्मचर्यमें प्रतिष्ठित,

---

[१] अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व तथा कामावसायित्व।

समदर्शी एवं भगवद्भक्त नौ-के-नौ पुत्र[१] ही अब संन्यासी होकर सदैव प्रभु श्रीगौरहरिके साथ विहार कर रहे हैं। अब उनके नाम श्रीनृसिंहानन्द तीर्थ, श्रीसत्यानन्द भारती, श्रीनृसिंह तीर्थ, श्रीचिदानन्द तीर्थ, श्रीजगन्नाथ तीर्थ, श्रीवासुदेव तीर्थ, श्रीराम तीर्थ, श्रीगरुड़ अवधूतके नामसे भी प्रसिद्ध श्रीपुरुषोत्तम तीर्थ तथा श्रीगोपेन्द्र आश्रम हैं॥९८-१०१॥

लोके ये निधयः ख्याताः पद्म-शङ्खादयो नव।
अत्रैव निधिरत्नाख्य गर्भ जाताः प्रभोः प्रियाः॥१०२॥

श्रीश्रीनिधिश्च श्रीगर्भः कविरत्नः सुधानिधिः।
विद्यानिधिर्गुणनिधि रत्नबाहुर्द्विजाग्रणीः।
श्रीमानाचार्यरत्नश्च श्रीरत्नाकर पण्डितः॥१०३॥

विश्वमें पद्म, शंख आदि जो नौ निधियाँ[२] विख्यात हैं, उन्होंने ही श्रीनिधि, श्रीगर्भ, कविरत्न, सुधानिधि, विद्यानिधि, गुणनिधि, द्विजश्रेष्ठ रत्नबाहु, श्रीमान् आचार्यरत्न और श्रीरत्नाकर पण्डित नामक प्रभुके प्रियपात्रोंके रूपमें जन्म ग्रहण किया है॥१०२-१०३॥

---

[१] यद्यपि जयन्तीके नौ-के-नौ पुत्रों अर्थात् कवि, हवि, अन्तरीक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस तथा करभाजन का गौरलीलामें परिचय प्रदान करते समय श्रीलकविकर्णपूरने उनके दस नामोंका उल्लेख किया है, तथापि ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय श्रीपुरुषोत्तम तीर्थ श्रीगरुड़ अवधूतके नामसे भी प्रसिद्ध थे तथा ऐसा करनेसे ही श्लोकको सङ्गति सम्भवपर दीखती है। अतएव इसी आधारपर ही ऊपरलिखित अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

[२] पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व।

नीलाम्बरश्चक्रवर्ती गौरस्य भावि जन्म यत्।
सभादां कथयामास तेनासौ गर्ग उच्यते॥१०४॥

सभामें श्रीगौरहरिके भावी जन्मका अर्थात् श्रीगौरहरिके जन्म होनेके उपरान्त उनके भविष्यका वर्णन करनेवाले श्रीनीलाम्बर चक्रवर्तीको गर्गाचार्य कहा जाता है॥१०४॥

श्रीशच्या जनकत्वेन सुमुखो बल्लवो मतः।
पाटला या व्रजे ख्याता ज्ञेया तस्य सधर्मिणी॥१०५॥

श्रीशचीदेवीके पिता होनेके कारण श्रीनीलाम्बर चक्रवर्तीको (श्रीयशोदाके पिता) सुमुख गोप माना जाता है तथा जो व्रजमें सुमुख गोपकी सहधर्मिणी पाटलाके नामसे विख्यात थीं, वे ही अब श्रीशचीकी माता (विलासिनी) हुई हैं॥१०५॥

पुराणानामर्थवेत्ता श्रीदेवानन्दपण्डितः।
पुरासीन्नन्दपरिषत्पण्डितो भागुरिर्मुनिः॥१०६॥

श्रीनन्दकी सभाके पण्डित भागुरि मुनि नामक पुरोहित अब पुराणोंके अर्थज्ञाता श्रीदेवानन्द पण्डित हैं॥१०६॥

काशीनाथो लोकनाथः श्रीनाथो रामनाथकः।
चत्वारोऽमी ज्ञानिभक्ताः सनकाद्या न संशयः॥१०७॥

चतुर्ष्वप्येषु शब्देषु नाथशब्दस्य कीर्त्तनात्।
चतुःसनवदेवात्र चतुर्नाथ उदीरितः॥१०८॥

काशीनाथ, लोकनाथ, श्रीनाथ और रामनाथ—ये चारों पहले ज्ञानीभक्त सनक, सनन्द, सनातन और सनत्कुमार थे, इसमें कोई भी संशय नहीं है। जिस प्रकार सनक आदि

सभीके नाममें 'सन' का प्रयोग होनेके कारण उन्हें 'चतुःसन' कहा जाता है, उसी प्रकार इन चारोंके नामोंके साथ 'नाथ' शब्दका प्रयोग होनेके कारण इन्हें 'चतुर्नाथ' कहा जाता है॥१०७-१०८॥

वेदव्यासो य एवासीद्दासो वृन्दावनोऽधुना।
सखा यः कुसुमापीडः कार्यतस्तं समाविशत्॥१०९॥

श्रीवेदव्यास अब श्रीवृन्दावन दास ठाकुर हैं। व्रजके कुसुमापीड़ नामक सखा भी किसी कारण इनमें प्रविष्ट हुए हैं॥१०९॥

भट्टो वल्लभनामाभूच्छुको द्वैपायनात्मजः॥११०॥

श्रीकृष्णद्वैपायन वेदव्यासके पुत्र श्रीशुकदेव गोस्वामी ही अब श्रीवल्लभ भट्ट (वल्लभाचार्य) के नामसे प्रसिद्ध हैं॥११०॥

आचार्यः श्रीजगन्नाथो गङ्गादासः प्रभुप्रियः।
आसीन्निधुवने प्राग् यो दुर्वासा गोपिकाप्रियः॥१११॥

श्रीजगन्नाथ आचार्य और श्रीमन् महाप्रभुके प्रियपात्र श्रीगङ्गादास, ये दोनों पहले निधुवनमें गोपिकाप्रिय श्रीदुर्वासा ऋषि थे॥१११॥

चन्द्रशेखर आचार्यश्चन्द्रो ज्ञेयो विचक्षणैः।
श्रीमानुद्धवदासोऽपि चन्द्रावेशावतारकः॥११२॥

अतश्चैतन्यहरिणा कथितोऽयं निशापतिः।
श्रीमद्विश्वेश्वराचार्यो यः प्रागासीद्दिवाकरः॥११३॥

पण्डित लोग श्रीचन्द्रशेखर आचार्यको चन्द्र तथा श्रीमान् उद्धवदासको चन्द्रका आवेशावतार मानते हैं, इसीलिए श्रीचैतन्यहरि इन्हें निशापति (चन्द्र) कहते थे।

दिवाकर (सूर्य) ही अब श्रीमद् विश्वेश्वराचार्य हैं॥११२-११३॥

विश्वकर्मा पुरा योऽभूदद्य भास्करठक्कुरः।
भिक्षुको वनमाली यः सुदामासीत् द्विजः पुरा।
धनं प्राप्य प्रभोः सङ्गे दुःखं मत्वाभ्रमद्यतः॥११४॥

पहले जो विश्वकर्मा थे, वे अब भास्कर ठाकुर हैं तथा श्रीसुदामा विप्र ही वे वनमाली भिक्षु हैं जिन्होंने दरिद्रतासे उत्पन्न दुःखवशतः भ्रमण करते हुए अन्तमें श्रीमन् महाप्रभुके सङ्गमें धनको अर्थात् नित्य प्रेमधनको प्राप्त किया॥११४॥

वैकुण्ठे द्वारपालौ यौ जयाद्यविजयान्तकौ।
तावद्य जातौ स्वेच्छातः श्रीजगन्नाथ-माधवौ॥११५॥

वैकुण्ठके द्वारपाल जय और विजय स्वेच्छापूर्वक अब श्रीजगन्नाथ (जगाई) और माधव (माधाई) के रूपमें अवतीर्ण हुए हैं॥११५॥

पुण्डरीकाक्ष-कुमुदौ ख्यातौ वैकुण्ठमण्डले।
गोविन्द-गरुडाख्यौ तौ जातौ गौडे प्रभोः प्रियौ॥११६॥

वैकुण्ठके अत्यधिक प्रसिद्ध पुण्डरीकाक्ष और कुमुदने अब गौड़देशमें भगवान् श्रीगौरहरिके प्रियपात्र गोविन्द और गरुड़के रूपमें जन्म ग्रहण किया है॥११६॥

गरुडः पण्डितः सोऽद्यो गरुडो यः पुरा श्रुतः।
पुरा योऽक्रूरनामासीत् स गोपीनाथसिंहकः।
इति केचित् प्रभाषन्तेऽक्रूरः केशवभारती॥११७॥

पूर्वकालके गरुड़ ही अब गरुड़ पण्डित हैं तथा अक्रूर अब गोपीनाथ सिंह हैं। कोई-कोई केशव भारतीको भी अक्रूरका अवतार कहते हैं॥११७॥

पुरी श्रीपरमानन्दो य आसीदुद्धवः पुरा॥
इन्द्रद्युम्नो महाराजो जगन्नाथार्चकः पुरा।
जातः प्रतापरुद्रः सन् सम इन्द्रेण सोऽधुना॥११८॥

पहले जो उद्धव थे, वे ही अब श्रीपरमानन्द पुरी हैं तथा पहले जो श्रीजगन्नाथके अर्चक महाराज इन्द्रद्युम्न थे, उन्होंने ही इन्द्रके समान वैभवशाली होकर महाराज प्रतापरुद्रके रूपमें जन्म ग्रहण किया है॥११८॥

भट्टाचार्यः सार्वभौमः पुरासीद्गीष्पतिर्दिवि॥११९॥

देवलोकके बृहस्पति अब सार्वभौम भट्टाचार्य हैं॥११९॥

प्रियनर्मसखः कश्चिदर्जुनः पाण्डवोऽर्जुनः।
मिलित्वा समभूद्रामानन्दरायः प्रभोः प्रियः॥१२०॥

व्रजके ग्वालबाल अर्जुन नामक प्रियनर्म सखा तथा पाण्डुपुत्र अर्जुन—दोनोंने मिलकर प्रभुके प्रियपात्र श्रीराय रामानन्दके रूपमें जन्म ग्रहण किया है॥१२०॥

अतो राधाकृष्णभक्तिप्रेमतत्त्वादिकं कृती।
रामानन्दो गौरचन्द्रं प्रत्यवर्णयदन्वहम्॥१२१॥

ललितेत्याहुरेके यत्तदेकेनानुमन्यते।
भवानन्दं प्रति प्राह गौरो यत्त्वं पृथापतिः॥१२२॥

श्रीराय रामानन्द प्रतिदिन श्रीगौरचन्द्रके निकट श्रीराधाकृष्णकी भक्ति-प्रेमतत्त्व आदिके सम्बन्धमें (विद्यापति, चण्डीदास, श्रीगीतगोविन्दके रचयिता श्रीजयदेव गोस्वामी तथा स्वयं अपने द्वारा) लिखित पद्योंका वर्णन करते थे, इसलिए कोई-कोई महात्मा कहते हैं कि श्रीराय रामानन्द ललिता सखी हैं। किन्तु, अधिकांश महात्मा इसे स्वीकार नहीं करते, क्योंकि (श्रीराय रामानन्दके पिता) श्रीभवानन्दको स्वयं श्रीगौरचन्द्रने कहा था कि तुम पृथापति अर्थात् कुन्तीके पति राजा पाण्डु हो (अतएव इस सम्बन्धसे श्रीराय रामानन्द जी पाण्डुपुत्र अर्जुन हुए)॥१२१-१२२॥

गोप्यऽर्जुनीयया सार्द्धमेकीभूयापि पाण्डवः।
अर्जुनो यद्रायरामानन्द इत्याहुरुत्तमाः॥१२३॥

विज्ञजन कहते हैं कि पाण्डुपुत्र अर्जुन और अर्जुनीया नामक गोपी ही एकसाथ मिलकर राय रामानन्द हुए हैं॥१२३॥

अर्जुनीयाभवत्तूर्णमर्जुनोऽपि च पाण्डवः।
इति पाद्मोत्तरे खण्डे व्यक्तमेव विराजते।
तस्मादेतत्त्रयं रामानन्दराय-महाशयः॥१२४॥

श्रीपद्म पुराणके उत्तरखण्डमें यह स्पष्ट लिखा हुआ है कि अतिशीघ्र ही अर्जुन अर्जुनीया गोपी हुए। (अतएव निष्कर्ष यह है कि) प्रियनर्म सखा अर्जुन, अर्जुनीया गोपी

तथा पाण्डुपुत्र अर्जुन—तीनों मिलकर श्रीराय रामानन्द महाशय हुए हैं॥१२४॥

भक्ताख्य अर्थात् शुद्धभक्तके अन्तर्गत व्रजके भक्त

व्रजे भक्ताः समासेन कथ्यन्तेऽथ यथामति॥१२५॥

अब यथाशक्ति संक्षेपमें व्रजके भक्तोंके नाम बतला रहा हूँ॥१२५॥

पुरा श्रीदामनामासीदभिरामोऽधुना महान्।
द्वात्रिंशता जनैरेव वाह्यं काष्ठमुवाह यः॥१२६॥

पूर्वकालके श्रीदाम नामक गोपाल अब महात्मा अभिराम ठाकुर हैं। ये बत्तीस लोगोंके द्वारा वहन किये जानेवाली लकड़ीको अकेले ही उठाकर (वंशीके जैसे) धारण कर लेते थे॥१२६॥

पुरा सुदामनामासीदद्य ठक्कुरसुन्दरः।
वसुदामसखायश्च पण्डितः श्रीधनञ्जयः॥१२७॥

पूर्वकालके सुदाम नामक गोपाल अब सुन्दर ठाकुर तथा वसुदाम नामक सखा श्रीधनञ्जय पण्डित हैं॥१२७॥

सुबलो यः प्रियश्रेष्ठः स गौरीदासपण्डितः।
कमलाकरः पिप्पलाइनाम्नासीद्यो महाबलः॥१२८॥

श्रीकृष्णचन्द्रके अतिशय प्रिय सखा सुबल श्रीगौरीदास पण्डित तथा महाबल नामक सखा कमलाकर पिप्पलाइ हैं॥१२८॥

सुबाहुर्यो व्रजे गोपो दत्त उद्धारणाख्यकः।
महेशपण्डितः श्रीमान्महाबाहुर्व्रजे सखा॥१२९॥

व्रजके सुबाहु नामक गोप अब उद्धारण दत्त कहलाते हैं। व्रजके महाबाहु सखा अब महेश पण्डित हैं॥१२९॥

स्तोककृष्णं सखा प्राग् यो दासः श्रीपुरुषोत्तमः॥१३०॥

स्तोककृष्ण नामक श्रीकृष्णके सखा अब श्रीपुरुषोत्तम दास हैं॥१३०॥

सदाशिवसुतो नाम्ना नागरः पुरुषोत्तमः।
वैद्यवंशोद्भवो दामा यो बल्लवो व्रजे॥१३१॥

व्रजके दाम नामक गोप सखा अब वैद्यवंशमें उत्पन्न सदाशिवके पुत्र नागर-पुरुषोत्तम हैं॥१३१॥

नाम्नार्जुनः सखा प्राग् यो दासः श्रीपरमेश्वरः।
कालः श्रीकृष्णदासः स यो लवङ्गः सखा व्रजे॥१३२॥

पूर्वके अर्जुन नामक सखा अब श्रीपरमेश्वर दास तथा व्रजके लवङ्ग नामक सखा काला कृष्णदास हैं॥१३२॥

खोलावेचातया ख्यातः पण्डितः श्रीधरो द्विजः।
आसीद्व्रजे हास्यकारी यो नाम्ना कुसुमासवः॥१३३॥

व्रजके हँसने-हँसानेवाले कुसुमासव नामक सखा अब ब्राह्मणवंशमें उत्पन्न खोलावेचा अर्थात् केले बेचनेवाले श्रीधरके नामसे विख्यात हैं॥१३३॥

बलरामसखः कश्चित् प्रबलो गोपबालकः।
आसीद्व्रजे पुरा योऽद्य स हलायुधठक्कुरः॥१३४॥

पहले व्रजमें जो श्रीबलदेवके सखा प्रबल नामक गोपबालक थे, वे अब हलायुध ठाकुर हैं॥१३४॥

वरूथपः सखा नाम्ना कृष्णचन्द्रस्य यो व्रजे।
आसीत् स एव गौराङ्गवल्लभो रुद्रपण्डितः॥१३५॥

व्रजमें जो वरूथप नामक श्रीकृष्णचन्द्रके सखा थे, वे अब श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके प्रिय श्रीरुद्रपण्डित हैं॥१३५॥

गन्धर्वो यो व्रजे गोपः कुमुदानन्दपण्डितः॥१३६॥

व्रजके गन्धर्व नामक गोप अब कुमुदानन्द पण्डित हैं॥१३६॥

पुरा वृन्दावने चेटौ स्थितौ भृङ्गार-भङ्गुरौ।
श्रीकाशीश्वर-गोविन्दौ तौ जातौ प्रभुसेवकौ॥१३७॥

पहले वृन्दावनमें भृङ्गार और भङ्गुर नामक जो दो भृत्य थे, उन्होंने ही श्रीकाशीश्वर और श्रीगोविन्द नाम धारण करके श्रीमन् महाप्रभुके सेवकके रूपमें जन्म ग्रहण किया है॥१३७॥

वृन्दावने स्थितौ प्राग् यौ भृत्यौ रक्तक-पत्रकौ।
गौराङ्गसेवकावद्य हरिदास बृहच्छिशू॥१३८॥

पहले वृन्दावनमें जो रक्तक और पत्रक नामक दो भृत्य थे, वे ही अब श्रीगौराङ्ग-सेवक बड़ा हरिदास[१] तथा छोटा हरिदास हुए हैं॥१३८॥

---

[१] नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुर नहीं।

पयोद-वारिदौ प्राग् यौ नीरसंस्कारकारिणौ।
तावद्य भृत्यौ रामायिर्नन्दायिश्चेति विश्रुतौ॥१३९॥

पहले जो जलसंस्कारकारी[1] पयोद और वारिद नामक श्रीकृष्णके सेवक थे, वे ही अब रामायी और नन्दायीके नामसे प्रसिद्ध हैं॥१३९॥

व्रजे स्थितौ गायकौ यौ मधुकण्ठ-मधुव्रतौ।
मुकुन्द-वासुदेवौ तौ दत्तौ गौराङ्ग-गायकौ॥१४०॥

व्रजके मधुकण्ठ और मधुव्रत नामक गायक अब श्रीमुकुन्द दत्त और श्रीवासुदेव दत्त नामक श्रीगौराङ्गदेवके गायक हैं॥१४०॥

नटश्चन्द्रमुखः प्राग् यः स करो मकरध्वजः॥१४१॥

पूर्वकालके नट अर्थात् नाटकमें अभिनय करनेवाले चन्द्रमुख अब मकरध्वज-कर हुए हैं॥१४१॥

पुरासीद्यो व्रजे नाम्ना मृदङ्गी श्रीसुधाकरः।
स श्रीशङ्करघोषोऽद्य डम्फवाद्यविशारदः॥१४२॥

पहले व्रजमें जो श्रीसुधाकर नामसे विख्यात मृदङ्गी अर्थात् मृदङ्ग बजानेवाले थे, वे अब डम्फवाद्य[2] विशारद श्रीशङ्कर घोष हैं॥१४२॥

---

[1] गोचारणके समय श्रीकृष्णके व्यवहारके लिए जलसे परिपूर्ण पात्रोंको उठाकर ले जानेवाले।

[2] पहियेके आकारकी गोल लकड़ीको एक ओरसे चमड़े द्वारा ढक देनेपर ही यह यन्त्र निर्मित होता है।

आसीद्व्रजे चन्द्रहासो नर्त्तको रसकोविदः।
सोऽयं नृत्यविनोदी श्रीजगदीशाख्य-पण्डितः॥१४३॥

व्रजके चन्द्रहास नामक विख्यात रसज्ञ नर्त्तक अब नृत्यविनोदी श्रीजगदीश पण्डित हैं॥१४३॥

वेणुञ्च मुरलीं योऽधान्नाम्ना मालाधरो व्रजे।
सोऽधुना वनमाल्याख्यः पण्डितो गौरवल्लभः॥१४४॥

व्रजमें जो मालाधर नामक दास वेणु और मुरली धारण करते थे, वे अब गौरप्रिय श्रीवनमाली पण्डित हैं॥१४४॥

वृन्दावने यौ विख्यातौ शुकौ दक्ष-विचक्षणौ।
तावद्य जातौ मज्ज्येष्ठौ चैतन्य-रामदासकौ॥१४५॥

वृन्दावनके दक्ष और विचक्षण नामक दो शुकपक्षी अब मेरे ज्येष्ठ भ्राता श्रीचैतन्य और श्रीरामदास हुए हैं॥१४५॥

भक्त शक्ति श्रीगदाधर पण्डित आदिका विस्तृत विवरण

अधुना बल्लवीवर्गा ये ये भूताः प्रभुप्रियाः।
ते ते एव प्रकाश्यन्ते यथामति यथाश्रुतम्॥१४६॥

श्रीकृष्णकी प्रेयसी व्रजगोपियोंने जिस-जिस रूपमें जन्म ग्रहण किया, अब उनका अपनी बुद्धिके सामर्थ्यके अनुसार तथा जैसा भक्तोंके मुखसे श्रवण किया है, उसके अनुसार वर्णन किया जा रहा है॥१४६॥

श्रीराधाप्रेमरूपा या पुरा वृन्दावनेश्वरी।
सा श्रीगदाधरो गौरवल्लभः पण्डिताख्यकः॥१४७॥

जो पहले प्रेम-स्वरूपिणी वृन्दावनेश्वरी श्रीराधा थीं, वे अब श्रीगौरके अतिप्रिय श्रीगदाधर पण्डित हैं॥१४७॥

निर्णीतः श्रीस्वरूपैर्यो व्रजलक्ष्मीतया यथा॥१४८॥

"पुरा वृन्दावने लक्ष्मीः श्यामसुन्दरवल्लभा।
साद्य गौरप्रेमलक्ष्मीः श्रीगदाधरपण्डितः॥"१४९॥

श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामीने भी श्रीगदाधर पण्डितको व्रजकी (मूल) लक्ष्मीके रूपमें निर्धारित करते हुए कहा है कि पहले वृन्दावनमें जो श्रीश्यामसुन्दरकी प्रियतमा सर्वलक्ष्मीमयी (श्रीराधा) थीं, वही अब गौरप्रेम-लक्ष्मी श्रीगदाधर पण्डित हैं॥१४८-१४९॥

राधामनुगता यत्तल्ललिताप्यनुराधिका।
अतः प्राविशदेषा तं गौरचन्द्रोदये यथा॥१५०॥

श्रीराधाकी अनुगता होनेके कारण अनुराधा नामसे विख्यात श्रीललितादेवी भी श्रीगदाधर पण्डितमें प्रविष्ट हुई हैं। इसका श्रीचैतन्यचन्द्रोदय नाटकके तृतीय अङ्कके इक्यावनवें श्लोकमें इस प्रकार वर्णन किया गया है—॥१५०॥

"इयमपि ललितैव राधिकाली
न खलु गदाधर एष भूसुरेन्द्रः।
हरिरयमथवा स्वयैव शक्त्या
त्रितयमभूत् स सखी च राधिका च॥"१५१॥

"अहो! यह भूसुर अर्थात् पण्डित श्रीगदाधर नहीं हैं, ये तो श्रीराधाजीकी सखी ललिताकी भाँति ही दिखायी दे

रहे हैं[१] अथवा ये श्रीगौरहरि ही अपनी शक्तिके प्रभावसे स्वयंरूप श्रीकृष्ण, श्रीराधारूप तथा श्रीललितारूप हुए हैं॥"१५१॥

ध्रुवानन्दब्रह्मचारी ललितेत्यपरे जगुः।
स्वप्रकाशविभेदेन समीचीनं मतन्तु तत्॥१५२॥

कोई-कोई कहते हैं कि ध्रुवानन्द ब्रह्मचारी ललिता हैं। यह विचार भी स्वप्रकाश अर्थात् श्रीललितादेवीके प्रकाशके विशेष भेदके कारण सुसङ्गत है॥१५२॥

अथवा भगवान् गौरः स्वेच्छयागात्त्रिरूपताम्।
अतः श्रीराधिकारूपः श्रीगदाधरपण्डितः॥१५३॥

अथवा भगवान् श्रीगौरचन्द्र स्वेच्छापूर्वक तीन रूपोंमें प्रकट हुए हैं। अतएव श्रीगदाधर पण्डित श्रीराधिका-स्वरूप हैं॥१५३॥

राधाविभूतिरूपा या चन्द्रकान्तिः पुरा स्थिता।
साद्य गौराङ्गनिकटे दासवंश-गदाधरः॥१५४॥

जो पहले राधिकाकी विभूति स्वरूपा अर्थात् श्रीमतीकी अङ्गशोभा चन्द्रकान्ति थीं, वे अब श्रीगौराङ्गके निकट दासवंशके गदाधर अर्थात् श्रीगदाधर दास हैं॥१५४॥

पूर्णानन्दा व्रजे यासीत् बलदेवप्रियाग्रणीः।
सापि कार्यवशादेव प्राविशत्तं गदाधरम्॥१५५॥

---

[१] गदाधर पण्डितमें ललिता सखीके प्रवेशके बिना ऐसा होना कदापि सम्भवपर नहीं था।

व्रजमें श्रीबलरामकी प्रियाओंमें श्रेष्ठ पूर्णानन्दा भी किसी कारणवश इन्हीं श्रीगदाधर दासमें प्रविष्ट हुई हैं॥१५५॥

पुरा चन्द्रावली यासीद्व्रजे कृष्णप्रिया परा।
अधुना गौड़देशे सा कविराजः सदाशिवः॥१५६॥

व्रजमें जो पहले श्रीकृष्णकी परमप्रिया चन्द्रावली थीं, वे अब गौड़देशमें सदाशिव कविराज हैं॥१५६॥

यस्या वक्षसि सुष्वाप कृष्णो वृन्दावने पुरा।
सा श्रीभद्राद्य गौराङ्गप्रियः शङ्करपण्डितः॥१५७॥

वृन्दावनमें श्रीकृष्णने जिनके वक्षःस्थलपर शयन किया था, वे ही श्रीभद्रा सखी अब श्रीगौराङ्ग-प्रिय शङ्कर पण्डित हैं॥१५७॥

पुरा श्रीतारका-पाल्यौ ये स्थिते व्रजमण्डले।
ते साम्प्रतं जगन्नाथ-श्रीगोपालौ प्रभोः प्रियौ॥१५८॥

व्रजमण्डलमें जो पहले श्रीतारका और पाली नामक गोपियाँ थीं, वे दोनों ही अब प्रभुके प्रिय श्रीजगन्नाथ और श्रीगोपाल हैं॥१५८॥

शैब्या यासीत् व्रजे चण्डी स दामोदरपण्डितः।
कुतश्चित् कार्यतो देवी प्राविशत्तं सरस्वती॥१५९॥

व्रजकी प्रखरा शैब्या अब दामोदर पण्डित हैं, किसी कार्यवश श्रीसरस्वतीदेवी भी इनमें प्रविष्ट हुई हैं॥१५९॥

कलामशिक्षयद्राधां या विशाखा व्रजे पुरा।
साद्य स्वरूपगोस्वामी तत्तद्भावविलासवान्॥१६०॥

पहले व्रजमें जो विशाखा नामक सखी श्रीराधिकाको कला सिखाती थीं, वे ही अब तत्तद्भावविलासी अर्थात् श्रीगौरलीलामें राधाभाव-मूर्त्ति श्रीगौरहरिके भावोंमें विलास करनेवाले (उनके द्वितीय स्वरूप) श्रीस्वरूप दामोदर गोस्वामी हैं॥१६०॥

केश विन्यासमकरोद्राधां चित्रा व्रजे पुरा।
सेदानीं कविराजः श्रीवनमाली प्रभोः प्रियः॥१६१॥

पहले व्रजमें चित्रा नामक जो सखी श्रीराधाके केशका प्रसाधन करती थीं, वे अब श्रीमन् महाप्रभुके प्रिय श्रीवनमाली कविराज हैं॥१६१॥

श्रीराधाप्राणरूपा या श्रीचम्पकलता व्रजे।
साद्य राघवगोस्वामी गोवर्धनकृतस्थितिः।
भक्तिरत्नप्रकाशाख्य ग्रन्थो येन विनिर्मितः॥१६२॥

व्रजमें जो श्रीराधाकी प्राणस्वरूपा श्रीचम्पकलता सखी थीं, वे ही अब श्रीराघव गोस्वामी हैं। ये वही राघव गोस्वामी हैं, जिन्होंने श्रीगोवर्धनको अपना निवास स्थान बनाया तथा 'भक्तिरत्न-प्रकाश' नामक ग्रन्थकी रचना की॥१६२॥

तुङ्गविद्या व्रजे यासीत् सर्वशास्त्र विशारदा।
सा प्रबोधानन्दयतिगौरोद्गानसरस्वती॥१६३॥

व्रजमें जो सभी शास्त्रोंमें पारङ्गत तुङ्गविद्या नामक सखी थीं, वे अब श्रीगौरचन्द्रके गुणोंका गान करनेवाले यति श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती हैं॥१६३॥

इन्दुलेखा व्रजे यासीच्छ्रीराधायाः सखी पुरा।
कृष्णदासब्रह्मचारी कृतवृन्दावनस्थितिः॥१६४॥

पहले व्रजमें जो श्रीराधाकी सखी इन्दुलेखा थीं, वे अब श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी हैं। इन्होंने श्रीवृन्दावनको अपना वासस्थान बनाया है॥१६४॥

रङ्गदेवी पुरा यासीदद्य भट्टो गदाधरः।
अनन्ताचार्यगोस्वामी या सुदेवी पुरा व्रजे॥१६५॥

पहले जो रङ्गदेवी थीं, वे अब गदाधर भट्ट हैं तथा व्रजकी सुदेवी अब श्रीअनन्ताचार्य गोस्वामी हैं॥१६५॥

श्रीकाशीश्वरगोस्वामी शशिरेखा पुरा व्रजे।
धनिष्ठा भक्ष्यसामग्रीं कृष्णायादात् व्रजेऽमिताम्।
सैव सम्प्रति गौराङ्गप्रियो राघवपण्डितः॥१६६॥

पहले व्रजमें जो शशिरेखा नामक सखी थीं, वे अब श्रीकाशीश्वर गोस्वामी हैं। व्रजकी धनिष्ठा नामक जो सखी श्रीकृष्णके लिए अपरिमित स्वादिष्ट खाद्य सामग्री प्रस्तुत करती थीं, वे अब गौराङ्गप्रिय श्रीराघव पण्डित हैं॥१६६॥

गुणमाला व्रजे यासीद्दमयन्ती तु तत्स्वसा।
रत्नरेखा कृष्णदासः कृष्णानन्दः कलावती॥१६७॥

व्रजकी गुणमाला सखी अब श्रीराघव पण्डितकी बहन दमयन्ती हैं। रत्नरेखा सखी श्रीकृष्णदास तथा कलावती सखी श्रीकृष्णानन्द हैं॥१६७॥

शौरसेनी पुरा नारायणवाचस्पतिः कृती।
पीताम्बरस्तु कावेरी सुकेशी मकरध्वजः॥१६८॥

पहले जो शौरसेनी सखी थी, वे अब नारायण वाचस्पति हैं। कावेरी सखी पीताम्बर तथा सुकेशी सखी मकरध्वज पण्डित (श्रीगोपालगुरु गोस्वामी) हैं॥१६८॥

माधवी माधवाचार्य इन्दिरा जीवपण्डितः॥१६९॥

माधवी सखी माधवाचार्य और इन्दिरा सखी जीव पण्डित हैं॥१६९॥

व्रजे यासीत् सुमधुरा तुङ्गविद्या प्रिया पुरा।
विद्यावाचस्पतिर्गौरप्रियो व्रजजनप्रियः॥१७०॥

पहले जो व्रजमें सुमधुरा नामक तुङ्गविद्याकी प्रिय सखी थीं, वे अब श्रीगौरचन्द्र और व्रजवासियोंके प्रिय श्रीविद्यावाचस्पति हैं॥१७०॥

बलभद्राख्यको भट्टाचार्यः श्रीमधुरेक्षणा।
श्रीनाथमिश्रश्चित्राङ्गी कविचन्द्रो मनोहरा॥१७१॥

जो पहले मधुरेक्षणा सखी थीं, वे अब बलभद्र भट्टाचार्य नामसे प्रसिद्ध हैं। चित्राङ्गी सखी श्रीनाथ मिश्र तथा मनोहरा सखी कविचन्द्र हैं॥१७१॥

व्रजे नान्दीमुखी यासीत् साद्य सारङ्गठक्कुरः।
प्रह्लादो मन्यते कैश्चिन्मत्पित्रा स न मन्यते॥१७२॥

व्रजकी नान्दीमुखी अब सारङ्ग ठाकुर हैं। कोई-कोई महात्मा इन्हें प्रह्लाद कहते हैं, किन्तु मेरे पिता (श्रीशिवानन्द सेन) ने इसे स्वीकार नहीं किया॥१७२॥

कलकण्ठी-सुकण्ठ्यौ ये व्रजे गान्धर्वनाटिके।
रामानन्दवसुः सत्यराजश्चापि यथायथम्॥१७३॥

व्रजमें जो कलकण्ठी (कलाकण्ठी) और सुकण्ठी नामक गान्धर्व नाटिका अर्थात् नृत्य, गीत-वाद्य आदि कलाओंमें निपुण थीं, वे दोनों अब यथाक्रमसे रामानन्द वसु और सत्यराज (खाँ) हैं॥१७३॥

व्रजे कात्यायनी यासीदद्य श्रीकान्तसेनकः॥१७४॥

व्रजकी कात्यायनी अब श्रीकान्त सेन हैं॥१७४॥

व्रजाधिकारिणी यासीद्वृन्दादेवी तु नामतः।
सा श्रीमुकुन्ददासोऽद्य खण्डवासः प्रभुप्रियः॥१७५॥

व्रजकी अधिकारिणी वृन्दादेवी अब श्रीमन् महाप्रभुके प्रिय खण्डग्राम-वासी श्रीमुकुन्द दास हैं॥१७५॥

पुरा वृन्दावने वीरादूती सर्वाश्च गोपिकाः।
निनाय कृष्णनिकटं सेदानीं जनको मम।
व्रजे बिन्दुमती यासीदद्य सा जननी मम॥१७६॥

पहले जो वृन्दावनकी वीरा नामक दूती सभी गोपियोंको श्रीकृष्णके निकट ले जाती थीं, वे अब मेरे पिता श्रीशिवानन्द सेन हैं तथा व्रजकी बिन्दुमती अब मेरी माता हैं॥१७६॥

पुरा मधुमती प्राणसखी वृन्दावने स्थिता।
अधुना नरहर्याख्यः सरकारः प्रभोः प्रियः॥१७७॥

पहले वृन्दावनमें मधुमती नामक जो प्राणसखी थीं, वे अब प्रभुके प्रियपात्र श्रीनरहरि सरकार हैं॥१७७॥

पुरा प्राणसखी यासीन्नाम्ना रत्नावली व्रजे।
गोपीनाथाख्यकाचार्यो निर्मलत्वेन विश्रुतः॥१७८॥

पहले जो व्रजमें रत्नावली नामक प्राणसखी थीं, वे अब पुण्यवानके रूपमें विख्यात श्रीगोपीनाथ आचार्य हैं॥१७८॥

वंशी कृष्णप्रिया यासीत् सा वंशीदास-ठक्कुरः॥१७९॥

श्रीकृष्णकी प्रिय वंशी अब श्रीवंशीदास ठाकुर हैं॥१७९॥

श्रीरूपमञ्जरी ख्याता यासीद् वृन्दावने पुरा।
साद्य रूपाख्य-गोस्वामी भूत्वा प्रकटतामियात्॥१८०॥

पहले वृन्दावनमें जो श्रीरूपमञ्जरीके नामसे विख्यात थीं, वे ही अब श्रीरूप गोस्वामीके रूपमें प्रकट हुई हैं॥१८०॥

या रूपमञ्जरीप्रेष्ठा पुरासीद्रतिमञ्जरी।
सोच्यते नामभेदेन लवङ्गमञ्जरी बुधैः॥१८१॥

साद्य गौराभिन्नतनुः सर्वाराध्यः सनातनः।
तमेव प्राविशत् कार्यान्मुनिरत्नः सनातनः॥१८२॥

श्रीरूपमञ्जरीकी प्रिय रतिमञ्जरी, जिन्हें पण्डितजन लवङ्गमञ्जरी भी कहते हैं, वे ही अब श्रीगौराङ्गके अभिन्न तनु, सबके आराध्य श्रीसनातन गोस्वामी हैं। मुनिरत्न सनातन भी कार्यवशतः इनमें प्रविष्ट हुए हैं॥१८१-१८२॥

श्रीमल्लवङ्गमञ्जर्याः प्रकाशत्वेन विश्रुतः।
शिवानन्दश्चक्रवर्ती कृतवृन्दावनस्थितिः॥१८३॥

वे श्रीशिवानन्द चक्रवर्ती, जिन्होंने श्रीवृन्दावनको अपना निवास स्थान बनाया है, लवङ्गमञ्जरीके प्रकाशके रूपमें प्रसिद्ध हैं॥१८३॥

अनङ्गमञ्जरी यासीत् साद्य गोपालभट्टकः।
भट्टगोस्वामिनं केचिदाहुः श्रीगुणमञ्जरी॥१८४॥

श्रीअनङ्गमञ्जरी ही अब श्रीगोपाल भट्ट गोस्वामी हैं। कोई-कोई इन्हें गुणमञ्जरी भी कहते हैं॥१८४॥

रघुनाथाख्यको भट्टः पुरा या रागमञ्जरी।
कृतश्रीराधिकाकुण्ड-कुटीरवसतिः स तु॥१८५॥
दासश्रीरघुनाथस्य पूर्वाख्या रसमञ्जरी।
अमुं केचित् प्रभाषन्ते श्रीमतीं रतिमञ्जरीम्।
भानुमत्याख्यया केचिदाहुस्तं नामभेदतः॥१८६॥

पूर्वकालकी रागमञ्जरी ही श्रीरघुनाथ भट्ट कहलाते हैं।

श्रीराधाकुण्डके तटपर कुटीरमें वास करनेवाले श्रीरघुनाथदास गोस्वामीका पूर्वनाम रसमञ्जरी है। कोई-कोई इन्हें श्रीरतिमञ्जरी भी कहते हैं। नाम भेदसे कोई-कोई इन्हें भानुमती भी कहते हैं॥१८५-१८६॥

भूगर्भठक्कुरस्यासीत् पूर्वाख्या प्रेममञ्जरी।
लोकनाथाख्य-गोस्वामी श्रीलीलामञ्जरी पुरा॥१८७॥

श्रीकृष्णलीलाकी प्रेममञ्जरी अब श्रीभूगर्भ ठाकुर हैं और जो पहले लीलामञ्जरी थीं, वे अब श्रीलोकनाथ गोस्वामीके रूपमें प्रसिद्ध हैं॥१८७॥

कलावती रसोल्लासा गुणतुङ्गा व्रजे स्थिता।
श्रीविशाखाकृतं गीतं गायन्ति स्माद्य ता मताः।
गोविन्द-माधवानन्द-वासुदेवा यथाक्रमं॥१८८॥

कलावती, रसोल्लासा और गुणतुङ्गा नामक जो सखियाँ व्रजमें विशाखा सखी द्वारा रचित गीतोंको गाया करतीं थीं, अब वे यथाक्रमसे गोविन्द, माधवानन्द और वासुदेव हैं॥१८८॥

रागलेखा-कलाकेल्यौ राधादास्यौ पुरा स्थिते।
ते ज्ञेये शिखिमाहिती तत्स्वसा माधवी-क्रमात्॥१८९॥

जो पहले रागलेखा और कलाकेलि नामक श्रीराधिकाकी दासियाँ थीं, वे दोनों अब क्रमशः शिखिमाहिती और उनकी बहन माधवी देवीके नामसे जानी जाती हैं॥१८९॥

पुलिन्दतनया मल्ली कालिदासोऽधुनाभवत् ॥१९० ॥

पुलिन्द कन्या मल्ली अब कालिदास हैं॥१९०॥

शुक्लाम्बरो ब्रह्मचारी पुरासीद् यज्ञपत्निका।
प्रार्थयित्वा यदन्नं श्रीगौराङ्गो भुक्तवान् प्रभुः।
केचिदाहुर्ब्रह्मचारी याज्ञिकब्राह्मणः पुरा ॥१९१ ॥

जो पहले यज्ञपत्नी थीं, वे ही अब श्रीशुक्लाम्बर ब्रह्मचारी हैं। श्रीगौराङ्ग महाप्रभु इन्हींसे अन्नकी प्रार्थनाकर भोजन करते थे। कोई-कोई कहते हैं कि ये पहले याज्ञिक ब्राह्मण थे॥१९१॥

अपरे यज्ञपत्न्यौ श्रीजगदीश-हिरण्यकौ।
एकादश्यां ययोरन्नं प्रार्थयित्वाऽघसत् प्रभुः ॥१९२ ॥

अन्य दो यज्ञपत्नियोंने श्रीजगदीश और श्रीहिरण्यक नाम धारणकर जन्म ग्रहण किया है, श्रीमन् महाप्रभुने एकादशीके दिन इन्हींसे अन्न माँगकर भोजन किया था॥१९२॥

मथुरायां पुरा यासीत् सैरिन्ध्री कृष्णवल्लभा।
साद्य नीलाचलावासः काशीमिश्रः प्रभोः प्रियः ॥१९३ ॥

पहले मथुरामें जो श्रीकृष्णकी प्रिया सैरिन्ध्री (कुब्जा) थीं, वे ही अब प्रभुके प्रियपात्र नीलाचलवासी काशी मिश्र हैं॥१९३॥

मालती चन्द्रलतिका मञ्जुमेधा वराङ्गदा।
रत्नावली च कमला गुणचूडा सुकेशिनी ॥१९४ ॥

कर्पूरमञ्जरी श्याममञ्जरी श्वेतमञ्जरी।
विलासमञ्जरी कामलेखा च मौनमञ्जरी ॥१९५ ॥

गन्धोन्मादा रसोन्मादा चन्द्रिका कलभाषिणी।
गोपाली हरिणी काली कालाक्षी नित्यमञ्जरी ॥१९६ ॥

कलकण्ठी कुरङ्गाक्षी चन्द्रिका चन्द्रशेखरा।
या याः स्वयोग्यसेवायां नियुक्ताः सन्ति राधया ॥१९७ ॥

गौरेण तत्प्रियैः सार्धं धृतपूरुषविग्रहाः।
खेलन्ति स्म स्वभावानुसारात्ताः क्रमशो यथा ॥१९८ ॥

शुभानन्दो द्विजो ब्रह्मचारी श्रीधरनामकः।
परमानन्दगुप्तो यत्कृता कृष्णस्तवावली ॥१९९ ॥

रघुनाथो द्विजः कश्चिद्गौराङ्गानन्यसेवकः।
कंसारिसेनः सेनः श्रीजगन्नाथो महाशयः ॥२०० ॥

सुबुद्धिमिश्रः श्रीहर्षो रघुमिश्रो द्विजोत्तमः ॥२०१ ॥

रिपवः षट् काममुख्या जिता येन वशीकृताः।
यथार्थनामा गौरेण जितामित्रः स निर्मितः ॥२०२ ॥

निर्मिता पुस्तिका येन कृष्णप्रेमतरङ्गिणी।
श्रीमद्भागवताचार्यो गौराङ्गात्यन्तवल्लभः ॥२०३ ॥

सुशीलः पण्डितः श्रीमान् जीवः श्रीवल्लभात्मजः।
वाणीनाथद्विजश्चम्पहट्टवासी प्रभोः प्रियः ॥२०४ ॥

ईशानाचार्य-कमलौ लक्ष्मीनाथाख्य-पण्डितः।
गङ्गामन्त्री जगन्नाथो मामूपाधिर्द्विजोत्तमः ॥२०५ ॥

श्रीकण्ठाभरणोपाधिरनन्तश्चट्टवंशजः ।
हस्तिगोपालनामा च रङ्गवासी च वल्लभः ॥२०६ ॥

हर्याचार्यो गौरसङ्गी मिश्रः श्रीनयनस्तथा।
कविदत्तो रामदासश्चिरञ्जीव-सुलोचनौ ॥२०७ ॥

यद्यपि मूल श्लोकमें श्रीराधिकाजीके द्वारा यथायोग्य सेवामें नियुक्त गोपियोंके नामोंका तथा श्रीगौराङ्ग लीलामें अपने-अपने स्वभावके अनुसार अपने प्रिय श्रीमन् महाप्रभुके साथ लीला उपयोगी उनके पुरुष देहधारी स्वरूपोंका पृथक् रूपसे वर्णन किया गया है, तथापि हमने पाठकोंकी सुविधाके लिए ही उनके व्रजके स्वरूप तथा गौरलीलाके स्वरूपका एकसाथ वर्णन किया है।

व्रजकी मालती शुभानन्द द्विज और चन्द्रलतिका श्रीधर नामक ब्रह्मचारी हैं तथा मञ्जुमेधा वही परमानन्द गुप्त हैं, जिन्होंने श्रीकृष्ण 'स्तवावली' की रचना की है।

वराङ्गदा श्रीगौराङ्गके एकान्त सेवक रघुनाथ नामक कोई ब्राह्मण, रत्नावली कंसारि सेन, कमला श्रीजगन्नाथ सेन महाशय, गुणचूड़ा सुबुद्धि मिश्र, सुकेशिनी श्रीहर्ष, कर्पूर मञ्जरी द्विजश्रेष्ठ-रघु-मिश्र तथा श्याममञ्जरी वही जितामित्र हैं, जिन्होंने काम आदि प्रमुख छह रिपुओंको जीतकर वशीभूत कर लिया था तथा जिन्हें श्रीमन् महाप्रभुने उनके गुणोंके अनुसार यथार्थ नाम प्रदान किया था।

श्वेतमञ्जरी श्रीगौराङ्गके अत्यन्त प्रिय वही श्रीमद्भागवताचार्य हैं, जिन्होंने 'कृष्णप्रेमतरङ्गिणी' नामक ग्रन्थकी रचना की है।

विलासमञ्जरी श्रीवल्लभके सुशील एवं पण्डित सुपुत्र श्रील जीव गोस्वामी हैं।

कामलेखा महाप्रभुके अत्यन्त प्रिय चम्पकहट्ट निवासी द्विज वाणीनाथ हैं।

मौनमञ्जरी ईशान आचार्य, गन्धोन्मादा कमल, रसोन्मादा लक्ष्मीनाथ पण्डित, चन्द्रिका गङ्गामन्त्री, कलभाषिणी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ जगन्नाथ मामु, गोपाली चट्टवंशमें जन्म लेनेवाले कण्ठाभरण उपाधिसे विभूषित श्रीअनन्त, हरिणी हस्तिगोपाल, काली रङ्गवासी वल्लभ, कालाक्षी हरि आचार्य, नित्यमञ्जरी श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके सङ्गी श्रीनयन मिश्र, कलकण्ठी कविदत्त, कुरङ्गाक्षी रामदास, चन्द्रिका चिरञ्जीव तथा चन्द्रशेखरा सुलोचन हैं॥१९४-२०७॥

केचिन्महान्तः केचित्स्युर्महान्तश्चोपपूर्वकाः।
उभयेषां गुणास्तुल्यास्तेनामी गणिता मया॥२०८॥

यद्यपि इनमेंसे कोई-कोई महान्त और कोई-कोई उपमहान्त हैं, तथापि उन दोनोंके समान गुण होनेके कारण मैंने उनकी एक साथ गणना की है॥२०८॥

खण्डवासौ नरहरेः साहचर्यान्महत्तरौ।
गौराङ्गैकान्तशरणौ चिरञ्जीव-सुलोचनौ॥२०९॥

खण्डवासी श्रीनरहरिके सङ्गहेतु श्रीचिरञ्जीव और सुलोचन महत्तर हैं तथा वे श्रीगौराङ्ग महाप्रभुके एकान्त आश्रित हैं॥२०९॥

गुरोर्नाम न गृह्णयादिति शास्त्रानुसारतः।
श्रीश्रीनाथस्य पूर्वाख्या मया न प्रकटीकृता॥२१०॥

गुरुका पूर्वनाम अर्थात् उनके कृष्णलीलाके पूर्व परिचयका प्रकाश नहीं करना चाहिये—शास्त्रकी इसी विधिके अनुसार मैंने अपने गुरुदेव श्रीनाथ पण्डितके पूर्वनामको प्रकाशित नहीं किया है॥२१०॥

व्याचकार पारिपाट्याद्यो भागवत-संहिताम्।
कुमारहट्टे यत् कीर्त्तिः कृष्णदेवो विराजते॥२११॥

मेरे गुरुदेव श्रीनाथ पण्डितने अतिसुन्दर परिपाटी आदिके साथ श्रीभागवत्-संहिताकी (श्रीचैतन्यमत-चन्द्रिका नामक) व्याख्या की है तथा कुमारहट्टमें उनकी कीर्त्ति आज भी श्रीकृष्णदेव विग्रहके संस्थापकके रूपमें विराजमान है॥२११॥

ये ये महान्तः क्रमभङ्गभूता-
स्ते मेऽपराधं कृपया क्षमन्तम्।
गुणान् विनिर्णीय सतां समस्तान्
ब्रह्मेशशेषाः कथितुं न शक्ताः॥२१२॥

वर्णन करते समय जिन-जिन महान्तोंका क्रम भङ्ग हुआ है अर्थात् किसी कारणवश जिनका उल्लेख पहले करनेकी अपेक्षा बादमें किया गया है, वे कृपापूर्वक मेरे अपराधोंको क्षमा करें। ब्रह्मा, ईश महादेव और शेष भी साधुओंकी समस्त गुणावलीको ठीक-ठीक वर्णन करनेमें समर्थ नहीं हैं॥२१२॥

मीमांसकेभ्यः शठतार्किकेभ्यो
विशेषतो हेतुरतेभ्य एषः।
गोप्यः प्रयत्नाद्रसशास्त्रविद्भ्यो
देयः सदा गौरपदाश्रयेभ्यः ॥२१३॥

इस ग्रन्थको प्रयत्नपूर्वक मीमांसक, शठ और तार्किक, विशेषतः कारण ढूँढ़नेवालोंके निकट गोपन रखना चाहिये तथा श्रीगौराङ्गके चरणाश्रित, रसशास्त्र वेत्ताओंको सदैव प्रदान करना चाहिये॥२१३॥

श्रीगौरगणोद्देशदीपिका रचिता मया।
दीप्यतां परमानन्दसन्दोहभक्तवेश्मनि॥२१४॥

मेरे द्वारा रचित यह श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका परमानन्दमें निमग्न सभी भक्तोंके घरमें देदीप्यमान हो॥२१४॥

शाके वसुग्रहमिते मनुनैव युक्ते
ग्रन्थोऽयमाविरभवत् कतमस्य घस्रात्।
चैतन्यचन्द्रचरितामृतमग्नचित्तैः
शोध्यः समाकलितगौरगणाख्य एषः॥२१५॥

इति श्रीपुरीदासपरमानन्ददासापरनामधेय कविकर्णपूरविरचिता श्रीगौरगणोद्देशदीपिका समाप्ता॥

वसु (८) ग्रह (९) मनु (१४) से युक्त शकाब्दमें अर्थात् १४९८ शकाब्दके किसी एक दिन यह ग्रन्थ आविर्भूत हुआ। श्रीचैतन्यचन्द्रके चरितामृतमें निमग्न चित्तवाले विज्ञगण

श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थका अपने सद्‌गुणों द्वारा संशोधन करेंगे॥२१५॥

श्रीपुरीदास तथा श्रीपरमानन्द दास नामक नामोंसे प्रसिद्ध श्रीकविकर्णपूर विरचित श्रीगौरगणोद्देश-दीपिका नामक ग्रन्थका हिन्दी भावानुवाद समाप्त॥

पात्र-सूची

श्रीगौरपरिकरोंका पूर्व परिचय प्रदान करते हुए ग्रन्थकारने जिस किसी स्थानपर उनके दो भिन्न-भिन्न स्वरूपोंका वर्णन किया है, इस पात्र-सूचीमें उसे अल्प-विराम चिह्न (,) तथा जहाँपर एक ही परिकरमें अन्य किसीका प्रवेश बतलाया है, उसे योगचिह्न (+) के द्वारा दर्शाया गया है।

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
	अ	
अच्युतानन्द (अद्वैताचार्यके पुत्र)	८७-८८	कार्तिकेय, अच्युता नामक गोपी
अद्वैताचार्य	२, ११, १२, २४, ७६-८०	व्रजमें सदाशिवके आवेश स्वरूप गोपाल
अनन्त	२०६	गोपाली
अनन्त पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे अणिमा
अनन्ताचार्य गोस्वामी	१६५	सुदेवी
अभिराम ठाकुर	१२६	श्रीदाम
	आ	
आचार्य रत्न	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत अष्टम नील
	ई	
ईशान आचार्य	२०५	मौन मञ्जरी
ईश्वर पुरी	२३, २५	
	उ	
उद्धव दास	११२-११३	(चन्द्रके आवेशावतार)

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
उद्धारण दत्त	१२९	सुबाहु
उपेन्द्र मिश्र (महाप्रभुके पितामह)	३५	पर्जन्य महाराज (श्रीकृष्णके पितामह)
	क	
कंसारि सेन	२००	रत्नावली
कमल	२०५	गन्धोन्मादा
कमलाकर पिप्पलाई	१२८	महाबल
कमलावती (महाप्रभुकी पितामही)	३६	महामान्या वरीयसी (श्रीकृष्णकी पितामही)
कविचन्द्र	१७१	मनोहरा
कविदत्त	२०७	कलकण्ठी
कविरत्न	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत तृतीय शंख
काला कृष्णदास	१३२	लवङ्ग
कालिदास	१९०	(व्रजकी पुलिन्द कन्या) मल्ली
काशीनाथ	५०	कुलक (सत्यभामाके विवाहके लिए माधवके निकट भेजे गये ब्राह्मण)
काशीनाथ	१०७	ज्ञानीभक्त सनक
काशी मिश्र (नीलाचलवासी)	१९३	सैरिन्ध्री (कुब्जा)
काशीश्वर	१३७	भृङ्गार (श्रीकृष्णके भृत्य)
काशीश्वर गोस्वामी	१६६	शशिरेखा
कुमुदानन्द पण्डित	१३६	गन्धर्व (व्रजका गोप)

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
कुबेर पण्डित (अद्वैताचार्यके पिता)	८१-८५	गुह्यकेश्वर कुबेर
कृष्णदास	१६७	रत्नरेखा
कृष्णदास ब्रह्मचारी	१६४	इन्दुलेखा
कृष्ण मिश्र (अद्वैताचार्यके पुत्र)	८८	कार्तिकेय
कृष्णानन्द	१६७	कलावती
कृष्णानन्द पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे प्राकाम्य
केशव पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे ईशित्व
केशव भारती (महाप्रभुके संन्यासगुरु)	५२, ११७	सान्दीपनि मुनि, अक्रूर
	ख	
खोलाबेचा श्रीधर पण्डित	१३३	कुसुमासव
	ग	
गङ्गा (श्रीनित्यानन्द प्रभुकी कन्या)	६९	भगवती गङ्गा (विष्णुके श्रीचरणकमलोंसे उत्पन्न भागीरथी)
गङ्गा दास (महाप्रभुके प्रिय पात्र)	१११	दुर्वासा ऋषि
गङ्गा दास (महाप्रभुके विद्यागुरु)	५३	श्रीवशिष्ठ मुनि (श्रीरामचन्द्रके विद्यागुरु)
गङ्गामन्त्री	२०५	चन्द्रिका
गदाधर दास	१५४-१५५	चन्द्रकान्ति + पूर्णानन्दा

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
गदाधर पण्डित	११, १२, १४७-१५३, २०५	श्रीवृषभानु नन्दनी श्रीराधा + ललिता
गदाधर भट्ट	१६५	रङ्गदेवी
गरुड़	११६	कुमुद (वैकुण्ठ पार्षद)
गरुड़ पण्डित	११७	गरुड़ (विष्णुके वाहन)
गुणनिधि	१०२-१०३	नवनिधिके अन्तर्गत षष्ठ मुकुन्द
गोपाल	१५८	पाली
गोपाल भट्ट गोस्वामी	१८४	अनङ्ग मञ्जरी (गुण मञ्जरी)
गोपीनाथ आचार्य	७५	जगत्पति ब्रह्मा
गोपीनाथ आचार्य	१७८	रत्नावली
गोपीनाथ सिंह	११७	अक्रूर
गोपेन्द्र आश्रम	१०१	करभाजन
गोविन्द	११६	पुण्डरीकाक्ष (वैकुण्ठ पार्षद)
गोविन्द	१३७	भङ्गुर (श्रीकृष्णके भृत्य)
गोविन्द	१८८	कलावती
गोविन्द पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे लघिमा
गोविन्दाचार्य (गीत-वाद्य विशारद)	४१	पौर्णमासी
गोविन्दानन्द	९१	सुग्रीव
गौरीदास पण्डित	१२८	सुबल

च

चन्द्रशेखर आचार्य	११२-११३	चन्द्र

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
चिदानन्द तीर्थ	१००	प्रबुद्ध
चिरञ्जीव	२०७	चन्द्रिका
चैतन्य दास (शिवानन्द सेनके पुत्र)	१४५	दक्ष (व्रजके शुक पक्षी)
चैतन्य महाप्रभु, गौरचन्द्र	१, ६, ११, १२, १९, २०, २५, २७-३०	श्रीनन्दनन्दन, श्रीराधाकृष्ण मिलित विग्रह + आदिव्यूहके वासुदेव + अन्यान्य अवतार
	छ	
छोटा हरिदास	१३८	पक्तक (श्रीकृष्णके भृत्य)
	ज	
जगदानन्द पण्डित	५१	श्रीसत्यभामाके प्रकाश
जगदीश	१९२	यज्ञपत्नी
जगदीश पण्डित (नृत्यविनोदी)	१४३	चन्द्रहास (व्रजके नट)
जगन्नाथ	१५८	तारका
जगन्नाथ (जगाई)	११५	जय (वैकुण्ठके द्वारपाल)
जगन्नाथ तीर्थ	१००	पिप्पलायन
जगन्नाथ मामु	२०५	कलभाषिणी
जगन्नाथ मिश्र (महाप्रभुके पिता)	३७-३९	व्रजराज नन्द (श्रीकृष्णके पिता) + कश्यप + दशरथ + सुतपा + वसुदेव
जगन्नाथ सेन	२००	कमला
जगन्नाथ आचार्य (महाप्रभुके प्रिय पात्र)	१११	दुर्वासा ऋषि

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
जङ्गली (सीतादेवीकी परिचारिका)	८९	विजया (भगवती पौर्णमासीकी दासी)
जाह्नवा (नित्यानन्द प्रभुकी पत्नी)	६५, ६६	रेवतीदेवी (अनङ्ग मञ्जरी)
जितामित्र	२०२	श्याम मञ्जरी
जीव गोस्वामी	२०४	विलास मञ्जरी
जीव पण्डित	१६९	इन्दिरा
	द	
दमयन्ती (राघव पण्डितकी बहन)	१६७	गुणमाला
दामोदर पण्डित	१५९	शैब्या + सरस्वतीदेवी
दामोदर पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे वशित्व
देवानन्द पण्डित (कुलिया)	१०६	भागुरि मुनि (नन्दजीकी सभाके पण्डित)
द्विजवाणीनाथ	२०४	कामलेखा
द्विजश्रेष्ठ रत्नबाहु	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत सप्तम कुन्द
	ध	
धनञ्जय पण्डित	१२७	वसुदाम
ध्रुवानन्द ब्रह्मचारी	१५२	श्रीललितादेवीके प्रकाश
	न	
नकुल ब्रह्मचारी	७३(ख)	श्रीगौरहरिका आविर्भाव
नन्दायी	१३९	वारिद (व्रजके जलसंस्कारकारी)
नन्दिनी (सीतादेवीकी परिचारिका)	८९	जया (भगवती पौर्णमासीकी दासी)

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
नयन मिश्र	२०७	नित्य मञ्जरी
नरहरि सरकार	१७७	मधुमती
नागर पुरुषोत्तम	१३१	दाम
नारायण वाचस्पति	१६८	शौरसेनी
नारायणी (श्रीवासकी भतीजी	४३	किलिम्बिका (अम्बिकाकी बहन)
नित्यानन्द प्रभु	११, १२, ५९, ६१-६२, ६३, ६४	बलदेव प्रभुका प्रकाश
नीलाम्बर चक्रवर्ती (महाप्रभुके मातामह)	१०४-१०५	सुमुख गोप (श्रीकृष्णके मातामह), गर्गाचार्य
नृसिंह तीर्थ	१००	अन्तरीक्ष
नृसिंहानन्द तीर्थ	१००	कवि
प		
पद्मावती (श्रीनित्यानन्द प्रभुकी माता)	४०	श्रीरोहिणी (बलरामजीकी माता) + सुमित्रा
परमानन्द पुरी	११८	उद्धव
परमेश्वर दास	१३२	व्रजके अर्जुन
परानन्द गुप्त	१९९	मञ्जुमेधा
पीताम्बर	१६८	कावेरी सखी
पुण्डरीक विद्यनिधि	५४-५६	श्रीवृषभानु महाराज (श्रीराधाजीके पिता)
पुरन्दर पण्डित	९१	अङ्गद
पुरुषोत्तम तीर्थ	१००	चमस

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
पुरुषोत्तम दास	१३०	स्तोक कृष्ण
प्रतापरुद्र	११८	इन्द्रद्युम्न महाराज
प्रद्युम्न मिश्र	७४(क)	श्रीगौरहरिका आवेश
प्रबोधानन्द सरस्वती	१६३	तुङ्गविद्या
	ब	
बड़ा हरिदास	१३८	रक्तक (श्रीकृष्णके भृत्य)
बनमाली	४९	विश्वामित्र (घटक) + रुक्मिणीके द्वारा श्रीकृष्णके पास भेजे जानेवाले ब्राह्मण)
बनमाली भिक्षु	११४	सुदामा विप्र
बलभद्र भट्टाचार्य	१७१	मधुरेक्षणा
	भ	
भगवान् आचार्य खञ्ज	७४(ख)	श्रीगौराङ्गदेवकी कला
भागवताचार्य	२०३	श्वेत मञ्जरी
भास्कर ठाकुर	११४	विश्वकर्मा
भूगर्भ गोस्वामी	१८७	प्रेम मञ्जरी
	म	
मकरध्वज-कर	१४१	चन्द्रमुख (व्रजके गायक)
मकरध्वज पण्डित	१६८	सुकेशी
महेश पण्डित	१२९	महाबाहु
माधव (गङ्गाके पति)	६९	महाराज शान्तनु (गङ्गाके पति)
माधव (माधाई)	११५	विजय (वैकुण्ठके द्वारपाल)
माधव मिश्र (गदाधर पण्डितके पिता)	५७	(श्रीराधाके पिता) वृषभानु महाराजके प्रकाश विशेष

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
माधवाचार्य	१६९	माधवी
माधवानन्द	१८८	रसोल्लासा
माधवी देवी (शिखिमहतीकी बहन)	१८९	कलाकेली
माधवेन्द्र पुरी	२२	प्रीत, प्रेम, वत्सल और उज्ज्वल नामक फलोंको धारण करनेवाले कल्पतरु
मालिनी (श्रीवास पण्डितकी पत्नी)	४२	अम्बिका (श्रीकृष्णकी धातृमाता)
मीनकेतन रामदास (नित्यानन्द प्रभुके दास)	६८(ख)	आदि-व्यूहके सङ्कर्षण
मुकुन्द (हाडाई पिण्डत, नित्यानन्द प्रभुके पिता)	४०	श्रीवसुदेव (श्रीरामकृष्णके पिता) + दशरथ
मुकुन्द दत्त (गायक)	१४०	मधुकण्ठ (व्रजके गायक)
मुकुन्द दास (खण्डवासी)	१७५	वृन्दादेवी
मुरारी गुप्त	९१	हनुमान

र

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
रङ्ग पुरी	२४	
रघुनन्दन (खण्डवासी)	७०	चतुर्व्यूहमें तृतीय प्रद्युम्न, श्रीकृष्णके प्रियनर्म सखा
रघुनाथ दास गोस्वामी	१८६	रस मञ्जरी, रति मञ्जरी, भानुमती
रघुनाथ द्विज	२००	वराङ्गदा

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
रघुनाथ पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे प्राप्ति
रघुनाथ भट्ट गोस्वामी	१८५	राग मञ्जरी
रघु मिश्र	२०१	कर्पूर मञ्जरी
रत्नाकर पण्डित	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत नवम खर्व
रत्नावली (गदाधर पण्डितकी माता)	५७	कीर्तिदा (श्रीराधाकी माता)
राघव गोस्वामी	१६२	चम्पकलता
राघव पण्डित (पानिहाटी)	१६६	धनिष्ठा
राघव पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे कामावसयित्व
रामचन्द्र पुरी	९२	विभीषण + जटिला
राम तीर्थ	१०१	द्रुमिल
राम दास	२०७	कुरङ्गाक्षी
राम दास (शिवानन्द सेनके पुत्र)	१४५	विचक्षण (व्रजके शुक पक्षी)
रामनाथ	१०७	ज्ञानीभक्त सनत् कुमार
राम पण्डित (श्रीवास पण्डितके छोटे भाई)	९०	पर्वत मुनि
रामानन्द राय	१२०-१२४	प्रियनर्म सखा अर्जुन + अर्जुनीया गोपी + पाण्डुपुत्र अर्जुन
रामानन्द वसु	१७३	कलकण्ठी (कलाकण्ठी)
रामायी	१३९	पयोद (व्रजके जलसंस्कारकारी)
राय भवानन्द	१२२	पाण्डु महाराज (कुन्तीके पति)

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
रुद्र पण्डित	१३५	वरुथप (व्रजका गोप)
रूप गोस्वामी	१८०	रूप मञ्जरी
	ल	
लक्ष्मीनाथ पण्डित	२०५	रसोन्मादा
लक्ष्मीप्रिया (महाप्रभुकी प्रथम पत्नी)	४५-४६	श्रीजानकी (भगवान् रामचन्द्रकी महिषी) + श्रीरुक्मिणी (कृष्णकी पटरानी), साक्षात् लक्ष्मीका अवतार
लोकनाथ	१०९	ज्ञानीभक्त सनन्द
लोकनाथ गोस्वामी	१८७	लीला मञ्जरी
	व	
वंशीदास ठाकुर	१७९	श्रीकृष्णकी प्रिय वंशी
वनमाली कविराज	१६१	चित्रा (श्रीराधाका केश प्रसाधन करनेवाली)
वनमाली पण्डित	१४४	मालाधर (व्रजमें वेणु और मुरलीको धारण करनेवाले)
वक्रेश्वर पण्डित	७१-७३(क)	श्रीअनिरुद्ध + शशिरेखा
वल्लभ (रङ्गवासी)	२०६	काली
वल्लभ भट्ट (वल्लभाचार्य)	११०	शुकदेव गोस्वामी
वल्लभाचार्य (लक्ष्मीप्रियाके पिता)	४४	राजा जनक (सीताके पिता), भीष्मक (रुक्मिणीके पिता)
वसुधा (श्रीनित्यानन्द प्रभुकी पत्नी)	६५-६६	वारुणीदेवी

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
वासुदेव	१८८	गुणतुङ्गा
वासुदेव तीर्थ	१०१	आविर्होत्र
वासुदेव दत्त (गायक)	१४०	मधुव्रत (व्रजके गायक)
विद्यानिधि	१०२-१०३	नवनिधिके अन्तर्गत पञ्चम कच्छप
विद्यावाचस्पति	१७०	सुमधुरा
विश्वरूप (महाप्रभुके बड़े भाई)	३९, ५८-६०	बलदेव प्रभुके अंश श्रीसङ्कर्षण
विश्वेश्वश्वराचार्य	११३	दिवाकर (सूर्य)
विष्णुप्रिया	४७, ४८	भू-शक्ति (सत्यभामा)
वीरचन्द्र (श्रीनित्यानन्द प्रभुका पुत्र)	६७-६८(क)	क्षीरोदकशायी विष्णु + निशठ और उल्मुक गोपका प्रकाश
वृन्दावन दास ठाकुर	१०९	वेदव्यास + कुसुमापीड़ सखा
श		
शङ्कर घोष (डम्फ वादक)	१४२	सुधाकर (मृदङ्ग वादक)
शङ्कर पण्डित	१५७	भद्रा सखी
शचीदेवी (महाप्रभुकी माता)	३७, ३८, ३९	यशोदा (श्रीकृष्णकी माता) + अदिति + कौशल्या + पृश्नि + देवकी
शचीदेवीकी माता (महाप्रभुकी मातामही विलासिनी)	१०५	पाटला (श्रीकृष्णकी नानी)
शिखिमहती	१८९	रागलेखा

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
शिवानन्द चक्रवर्ती (वृन्दावनवासी)	१८३	लवङ्ग मञ्जरीके प्रकाश विशेष
शिवानन्द सेन	४, १७६	वीरा दूती
शिवानन्द सेनकी पत्नी	१७६	बिन्दुमती
शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी	१९१	प्रधाना यज्ञपत्नी, मतान्तरमें याज्ञिक ब्राह्मण
शुभानन्द द्विज	१९९	मालती
श्रीकान्त सेन	१७४	कात्यायनी
श्रीगर्भ	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत द्वितीय महापद्म
श्रीदेवी (श्रीअद्वैताचार्यकी दूसरी पत्नी)	८६	योगमाया भगवतीका प्रकाश
श्रीधर ब्रह्मचारी	१९९	चन्द्रलतिका
श्रीनाथ	१०७	ज्ञानीभक्त सनातन
श्रीनाथ पण्डित	३, २१०-२११	
श्रीनाथ मिश्र	१७१	चित्राङ्गी
श्रीनिधि	१०२-१०३	नवनिधिके अन्तर्गत प्रथम पद्म
श्रीवास पण्डित	११, १२, ९०	देवर्षि नारद

स

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
सत्यराज खाँ	१७३	सुकण्ठी
सत्यानन्द भारती	१००	हवि
सदाशिव कविराज	१५६	चन्द्रावली
सनातन गोस्वामी	१८१-१८२	रति मञ्जरी (लवङ्ग मञ्जरी), मुनिरत्न सनातन

पात्र	श्लोक संख्या	पूर्वलीलाका परिचय
सनातन मिश्र (विष्णुप्रियाके पिता)	४७	राजा सत्राजित (सत्यभामाके पिता)
सारङ्ग ठाकुर	१७२	नान्दीमुखी
सार्वभौम भट्टाचार्य	११९	बृहस्पति (देव गुरु)
सीतादेवी (अद्वैताचार्यकी पत्नी)	८६	योगमाया भगवती
सुदर्शन (महाप्रभुके विद्यागुरु)	५३	श्रीवशिष्ठ मुनि (श्रीरामचन्द्रके विद्यागुरु)
सुखानन्द पुरी	९६-९७	अष्टसिद्धिमेंसे महिमा
सुधानिधि	१०२, १०३	नवनिधिके अन्तर्गत चतुर्थ मकर
सुन्दर ठाकुर	१२७	सुदाम
सुबुद्धि मिश्र	२०१	गुणचूड़ा
सुलोचन	२०७	चन्द्रशेखरा
सूर्यदास (वसुधा और जाह्नवाके पिता)	६५	कुकुद्मी (रेवतीके पिता)
स्वरूप दामोदर	२, १६०	विशाखा
	ह	
हरिदास ठाकुर	९३, ९४, ९५	महातपा ब्रह्मा + प्रह्लाद, मुनि कुमार
हरि आचार्य	२०७	कालाक्षी
हर्ष मिश्र	२०१	सुकेशिनी
हलायुध ठाकुर	१३४	प्रबल (व्रजके सखा)
हस्तिगोपाल	२०६	हरिणी
हिरण्य	१९२	यज्ञपत्नी